ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५८ अंक -१ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जनवरी (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि मेले की झलकियाँ

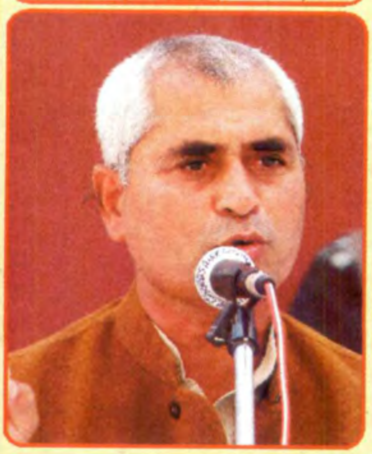

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जनवरी प्रथम २०१६

अनुक्रम

१.संरक्षण औचित्य का,आरक्षण का नहीं	सम्पादकीय	४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	७
३. आर्यों का महाकुम्भ : ऋषि-मेला	श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य	१४
४. संस्कृत की शब्द-सम्पदा	आ. आनन्दप्रकाश	१८
५. आर्य समाज का वेद प्रचार:......	रामनिवास गुणग्राहक	२३
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२५
७. गृहस्थाश्रम की सफलता के उपाय	प्रो. रामसिंह एम.ए.	२७
८. पुस्तक समीक्षा	देवमुनि	३२
९. जिज्ञासा समाधान-१०२	आचार्य सोमदेव	३५
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२५		३७
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

संरक्षण औचित्य का, आरक्षण का नहीं

आरक्षण के औचित्य और अनौचित्य को लेकर समय-समय पर विचार होता रहता है। विगत दिनों दो मुख्य व्यक्तियों की टिप्पणियाँ चर्चित रहीं, इनमें प्रथम- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत की टिप्पणी का अपना महत्त्व है। जब बिहार विधानसभा के चुनाव चल रहे थे, तब संघ चालक की टिप्पणी ने बिहार में भाजपा को और मोदी को जो लाभ पहुँचाया, उसे पार्टी और सरकार दोनों बहुत समय तक याद रखेंगे। तब सर संघ चालक ने कहा था- आरक्षण की निरन्तरता पर विचार होना चाहिये। लालू और नीतीश को ऐसा हथियार मिला कि पूरे चुनाव में इसे खूब चलाया, इतना चलाया कि लोगों ने बिहार में भाजपा की हार का इसे बड़ा कारण बताया। उस चुनाव के समय इस प्रकार की टिप्पणी अनावश्यक थी, परन्तु कुछ वक्तव्यों एवं घटनाओं का मूल्य घटित होने के पश्चात् पता लगता है। घटते समय या पूर्व उसका अनुमान लगाना बहुत कठिन होता है और जो लोग घटित बातों के परिणाम का अनुमान लगा सकते हैं, वे इस प्रकार की घटनाओं को घटित ही नहीं होने देते।

अभी १७ दिसम्बर को एक सम्मेलन में 'सामाजिक समावेश' के सन्दर्भ में बोलते हुए अपने पुराने विचारों के विपरीत, उन्होंने कहा, ''आरक्षण प्रणाली को खत्म करने का सवाल ही नहीं उठता। यह व्यवस्था भारतीय समाज में भेदभाव मौजूद रहने की स्थिति तक बनी रहनी चाहिए। सामाजिक समावेश की शुरूआत खुद से कर उसे दूसरे परिवार और फिर समाज तक बढ़ानी चाहिए। इस सामाजिक विविधता को बरकरार रखते हुए अंजाम दिया जाना चाहिए। इसके अलावा हिन्दुत्व के पीछे की भावनाओं, मूल्यों और दर्शनों का अनुसरण करना चाहिए।'' समाचार पत्र आगे लिखता है- ''सामाजिक समरसता एवं अखण्डता के बारे में संघ प्रमुख ने कहा कि कोई भी धर्म, सम्प्रदाय, समाज-सुधारक या सन्त मानव समुदाय के बीच भेदभाव का समर्थन नहीं कर सकता।'' (दैनिक जागरण कोलकाता, १८ दिसम्बर)

इसमें पहली टिप्पणी अवसर के विपरीत थी तो दूसरी सिद्धान्त के विपरीत। दूसरी टिप्पणी में आगे कहा गया है कि आरक्षण तब तक चलता रहना चाहिए जब तक आरक्षण प्राप्त लोग स्वयं ही इसको समाप्त करने की माँग न करें। पं. नेहरू ने भी हिन्दी को तब तक राष्ट्रभाषा न बनाने की बात कही थी, जब तक एक भी प्रदेश उसका विरोध करेगा। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति ऐसे कथन का कहीं से भी समर्थन नहीं कर सकता। संघ प्रमुख की प्रथम टिप्पणी समयोचित नहीं तो दूसरी टिप्पणी सिद्धान्त के विपरीत और समाज के लिए लाभदायक नहीं है। ऐसी परिस्थिति पर लोक में कहावत है- किसी ने कहा कि मेरे पिता ने दूसरी शादी कर ली। लोगों ने कहा- बुरा किया। कुछ दिनों बाद जब लोगों ने बुरा माना तो उसने फिर बताया- मेरे पिता ने दूसरी शादी छोड़ दी, तो लोगों ने कहा- यह उससे भी बुरा किया।

यह देश पिछले पाँच हजार साल से आरक्षण से ही पीड़ित है। यहाँ जन्म आरक्षित है, यहाँ कर्म आरक्षित है, यहाँ ज्ञान आरक्षित है, यहाँ अधिकार आरक्षित हैं, यहाँ साधन-सम्पत्ति आरक्षित है, यहाँ तो सभी कुछ आरक्षित है। इस आरक्षण के कारण ही यह देश दास बना। हजार साल तक दासता की बेड़ियों से निकला भी तो दूसरे आरक्षण के रूप में दासता का पट्टा गले में डालकर। मोहन भागवत कहते हैं- आरक्षण प्रणाली खत्म करने का सवाल ही नहीं उठता। यहाँ तो जिन्होंने हजारों साल से आरक्षण का ठेका ले रखा था, उनकी दुकानें उठ रही हैं। यह नया आरक्षण ऐसी कौन-सी चीज है, जिसे खत्म करने का सवाल नहीं उठता? खत्म करने का सवाल तो पहले वक्तव्य में आपने ही उठा दिया, फिर दूसरा क्यों नहीं उठायेगा।

लोग कहते हैं- आरक्षण से समाज में समानता बढ़ेगी। पहले के आरक्षण से समाज में समानता नहीं आई, तो इसमें कौन रामबाण नुस्खा लगा है, जो समाज में समानता उत्पन्न कर देगा? आरक्षण अयोग्यता का और स्वार्थ का है। जिस दिन ब्राह्मण ने आरक्षण किया था, तब भी उसने सारे अधिकार जन्म के आधार पर अपने लिये आरक्षित कर लिये थे। जब ब्राह्मण के आरक्षण से समाज या देश का भला नहीं हुआ, तब दलित के आरक्षण से समाज का भला कैसे हो जायेगा? ब्राह्मण या सवर्ण व्यक्ति जन्म के आधार पर अपने पद, पैसे, सुरक्षा के अधिकार समाज में प्राप्त करता था, तब उसने समाज में किसके साथ न्याय किया था? संघ प्रमुख किस दर्शन, सम्प्रदाय और समाज सुधारक की बात कर रहे हैं? उनमें आचार्य शंकर तो आते ही होंगे और यदि आते हैं तो आरक्षण के विषय में शंकराचार्य के विचारों से भी मोहन भागवत परिचित होंगे ही। शंकराचार्य जो समस्त संसार में अद्वैत के प्रख्यात आचार्य हैं, जो संसार में ब्रह्म के अतिरिक्त किसी की सत्ता को ही स्वीकार नहीं करते, जिनकी

दृष्टि में जड़ पदार्थ, कुत्ता या विद्वान् सभी कुछ ब्रह्म है, जिनमें लिये भेद बुद्धि पाप से कम नहीं है, वे ही शंकराचार्य अपने वेदान्त-दर्शन के भाष्य में वेदाध्ययन के अधिकार में स्त्री और शूद्र को वेद सुनने पर कान में सीसा पिघला कर डालने की बात करते हैं। यदि वे मन्त्र बोलें तो उनकी जीभ काट लेने की वकालत करते हैं तथा स्त्री शूद्र के वेद मन्त्र याद करने पर मार देने की बात को स्मृति के प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते हैं। (वेदान्त शांकर भाष्य- १/३/३८) इतना ही नहीं, शंकराचार्य अपने दर्शन, गीता, उपनिषद् भाष्यों में श्रुति के नाम पर वेदमन्त्र न देकर केवल उपनिषद् वाक्यों से काम चलाते हैं। क्या यह आरक्षण का परिणाम नहीं है?

जब मनुष्य साधन, सुविधा और अधिकार सहज जन्म के आधार पर पाता है, तो उसे कुछ भी प्राप्त करने के लिये संघर्ष करने की आवश्यकता ही नहीं रहती और जिसको संघर्ष नहीं करना पड़ता, वह कभी योग्य और विद्वान् नहीं बन सकता। ब्राह्मण और तथाकथित द्विजों का यही हुआ। सारा समाज ब्राह्मण गुरुओं के कारण अज्ञानी, आलसी, स्वार्थी बनकर रह गया। दूसरों को मूर्ख रखा तो स्वयं भी मूर्ख बन गये और अपने आप दूसरों के घरों में भोजन बनाकर अपनी सन्तुष्टि करने लगे। क्या यही हाल आज के आरक्षण में नहीं है कि एक बालक अपने परिश्रम और बुद्धि से नब्बे-पचानवे प्रतिशत अंक पाकर शिक्षा और अवसर से वञ्चित हो जाता है और जन्म के आधार पर दो-पाँच अंक प्राप्त करने वाला, आज बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त कर उच्च पदों का अधिकारी बन बैठता है। अयोग्यता का संरक्षण करने से जहाँ योग्यता का दास होता है, वहाँ अयोग्य व्यक्ति अपनी-अपनी अयोग्यता को छिपाने के लिये व्यर्थ के अहंकार में अपने सहकर्मियों को प्रताड़ित करता है। चिकित्सा, पठन-पाठन और तकनीक के कार्यों में जहाँ आरक्षण के कारण अयोग्य व्यक्ति पहुँच गये हैं, वे सारे अपने उत्तरदायित्व, अपने अधीन योग्य लोगों से करवाते हैं और उन्हें नीचा दिखाने का अवसर नहीं चूकते।

संघ प्रमुख की दूसरी बात का जहाँ तक प्रश्न है, वह भी मिथ्या है, क्योंकि मनुष्य और पशु का मौलिक स्वभाव समान है। दोनों स्वार्थ के प्रति स्वतः प्रेरित होते हैं। न्याय, परोपकार, धर्म, विद्या, विज्ञान विचार के परिणाम हैं। अज्ञानी तो जब भी बात करेगा, स्वार्थ की करेगा, दूसरे की हानि की बात करेगा। उससे किसी आदर्श की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि आरक्षण- प्राप्त लोगों को तृप्ति होती तो तथाकथित सवर्ण समाज बहुत पहले पिछड़ों और दलितों के अधिकार लौटा चुका होता, परन्तु समाज ने तो ऐसा नहीं किया। समाज में व्यक्ति होते हैं, जो अपनी विचार संवेदनशीलता से अन्याय का विरोध करते हैं, परन्तु समूह का विवेकशील बनना सम्भव नहीं है। आज जो दलितों के पास आरक्षण अधिकार है, वह सवर्णों की कृपा से तो नहीं है। आज भारत में वयस्क मताधिकार का ये कमाल है कि उनके मत पाने के लिये आप उन्हें आरक्षण देने को बैठे हैं और आज संघ चालक को आरक्षण बनाये रखने की वकालत करनी पड़ रही है, यह प्रजातन्त्र के मताधिकार का सामर्थ्य है। यदि देश में प्रजातन्त्र नहीं होता या दलित मतदाता निर्णायक संख्या में नहीं होते, तो क्या तब भी आरक्षण चलता रहता?कभी नहीं।

दलितों की बात छोड़ें, मुसलमान और ईसाइयों के भी आरक्षण की माँग की जा रही है। क्या इसके लिये किसी के पास कोई न्यायसंगत आधार है परन्तु राजनेताओं को लगता है कि इनके मतों से हम सत्ता तक पहुँच सकते हैं तो उनके लिये भी आरक्षण की माँग होने लगी। मायावती ने आरक्षण के बल पर सत्ता प्राप्त की, मुलायमसिंह ने भी मुस्लिम-यादव गठजोड़ कर उन्हें आरक्षित कर लिया और सत्ता पर अधिकार कर लिया। दक्षिण में दलित मतों के आधार पर जयललिता सत्ता में है तो बिहार में आरक्षण बचाओं के नेता सत्ता में है। आज आरक्षण राजनैतिक हथियार बन गया। जहाँ सवर्णों के मत खिसकने का भय सताता है, वहाँ सवर्णों के आरक्षण की बात की जाती है।

यह कहना तो उचित ही है कि समाज के अनेक वर्ग लम्बे समय से पीड़ित और प्रताड़ित किये जाते रहे हैं। जो लोग दलितों के उत्पीड़न की बात करते हैं, वे यह क्यों भूल जाते हैं कि जो ब्राह्मण दलितों को पीड़ित करता रहा है, वह घर की महिला का भी उसी प्रकार शोषण कर रहा है। परम्परा से वेद पढ़ने वाले पण्डित की पत्नी को वह आज वेद पढ़ने और वेद सुनने का अधिकार देने के लिये तैयार नहीं। इसके पीछे केवल मनुष्य का स्वार्थ और अज्ञान कारण है। इसको दूर करना आवश्यक है और यह किसी भी प्रकार के सामाजिक आरक्षण से दूर नहीं हो सकता। मूल बात तक हम पहुँचना नहीं चाहते कि जब तक किसी को समान अवसर नहीं मिलते, तब तक वह अपनी योग्यता प्रदर्शित करने में समर्थ नहीं हो सकता, आरक्षण की व्यवस्था समान अवसर की विरोधी और अयोग्य को संरक्षण प्रदान करती है।

संघ प्रमुख का मानना है कि समाज में दलितों-पिछड़ों का बहुत उत्पीड़न हुआ है, अतः उन्हें आरक्षण प्राप्त करने का अधिकार है। यदि न्याय के सिद्धान्त में यह स्वीकार्य हो कि जिसने मेरे पिता को मारा है, उसके पिता को मारने का मुझे अधिकार है, तब यह तर्क उचित है कि जिन सवर्णों के पूर्वजों ने समाज के इन लोगों को प्रताड़ित किया है, वे लोग उन

पीड़ित लोगों की सन्तानों का उसी प्रकार उत्पीड़न करें। समाज में हत्या करने के बदले हत्या करने वाले को न्यायालय दण्डित करता है, तो दूसरी ओर हत्यारे को भी फाँसी देता है। दण्ड अपराध करने वाले को मिलता है, अपराध किसी ने किया, बदले में किसी और को दण्डित करे, यह न्यायसंगत नहीं है।

हम उस बिन्दु को देखकर भी अनदेखा करना चाहते हैं, जो सारे पाप की जड़ है। वह है-हिन्दू समाज में व्याप्त जन्मना जाति व्यवस्था। पहला आरक्षण बना, जन्मना जाति को आधार मानकर आज भी हम जन्मना जाति को आरक्षण का आधार मान रहे हैं। जब जन्म पर आधारित एक व्यवस्था दोषपूर्ण है तो दूसरी जन्मगत जाति पर आधारित आरक्षण व्यवस्था श्रेष्ठ कैसे हो सकती है? अन्तर इतना है कि पहले समाज सवर्ण को अधिकारी मानता था, अब सरकार दलित को अधिकारी मानती है। हमारे न्याय में एक विचित्रता इस आरक्षण के कारण उत्पन्न हो गई है। एक ओर आरक्षण पाने वाले को अपनी जाति की घोषणा करनी पड़ती है तथा जाति प्रमाण-पत्र प्राप्त करना पड़ता है, वहीं कोई ऐसे व्यक्ति की जाति का उल्लेख करता है तो नियमानुसार दण्ड का भागी बनता है, क्योंकि समाज में जाति-सूचक शब्दों के साथ आज भी मान-अपमान के भाव जुड़े हुए हैं। एक सवर्ण व्यक्ति दलित को जातिसूचक शब्दों से पुकार कर मन में बड़ा सन्तोष अनुभव करता है, क्योंकि उसके मन में अपनी जाति के प्रति अहंकार का भाव रहता है।

आरक्षण को लेकर दूसरी घटना है गुजरात की, जहाँ हार्दिक पटेल के नेतृत्व में आरक्षण की माँग को लेकर पटेल समुदाय आन्दोलन कर रहा है। वहाँ न्यायाधीश परदीवाला ने एक दिसम्बर को हार्दिक पटेल के वाद में टिप्पणी की थी। न्यायाधीश परदीवाला ने व्यवस्था दी कि दो चीजों ने इस देश को तबाह कर दिया है या इस देश की सही दिशा में प्रगति नहीं हुई- पहला आरक्षण व दूसरा भ्रष्टाचार। न्यायाधीश ने इस बात का भी उल्लेख किया कि जब हमारा संविधान बनाया गया तो यह समझा गया कि आरक्षण दस वर्ष की अवधि के लिये रहेगा, पर दुर्भाग्यवश यह आजादी के ६५ वर्ष बाद भी जारी है। इस टिप्पणी पर राज्यसभा के सदस्यों द्वारा न्यायाधीश पर महाअभियोग लगाने का नोटिस राज्यसभा के सभापति को दिया गया। न्यायाधीश ने, हो सकता है संविधान के अनुकूल काम न किया हो, परन्तु बात तो सच ही कही थी। आज हमने आरक्षण संविधान में स्वीकार किया है, इसलिये उसका मानना अनिवार्य भी है और कर्त्तव्य भी, परन्तु जब हमें लगा है, संविधान में सुधार की आवश्यकता है तो हमने सुधार किया है। संविधान में जो लिखा है वह एक नागरिक को मान्य है, यह तो ठीक है परन्तु **'उसको उचित है'**, यह स्वीकार करना आवश्यक नहीं है। नियम कानून बहुमत से बनते हैं, सही या गलत होने से नहीं। इसलिये न्यायाधीश का कथन विधि के अनुकूल न हो, यह सम्भव है, परन्तु सत्य है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

अब विचारणीय इतना ही है कि संघ प्रमुख कहते हैं- ''आरक्षण पर विचार करने का प्रश्न ही नहीं उठता'', परन्तु न्यायाधीश का मानना है कि आज सबसे अधिक विचारणीय प्रश्न ही यह है कि आरक्षण का क्या औचित्य है? प्राचीन भारत के सम्बन्ध में विचार करते हैं तो जो लोग जाति व्यवस्था को बुरा मानते हैं तो उन्हें यह भी मानना होगा कि यह समाज अच्छा भी रहा होगा, उन्हें यह भी मानना होगा कि यह समाज आज बुरा है। यह तो नहीं हो सकता कि प्रारम्भ बुराई से हुआ होगा। यदि प्रारम्भ बुराई से हुआ है तो यह बुराई कभी समाप्त नहीं हो सकती, यदि बुराई बाद में आई तो मौलिक बात अच्छाई है, जिसे फिर भी लाया जा सकता है। वह अच्छाई है कि जाति जन्म से होती है, परन्तु वह है मनुष्य और पशु की जाति, मनुष्यों में स्त्री-पुरुष, पशुओं में घोड़ा, गधा, बैल, ऊँट, जिन्हें बदला नहीं जा सकता। जो जन्म की जाति को अपरिवर्तनीय मानते हैं, उन्हें ऋषि दयानन्द की एक बात याद रखनी चाहिये। एक जन्मना जाति मानने वाले ने ऋषि दयानन्द से पूछा- आप जन्म से जाति मानते हैं या कर्म से? तो स्वामी जी ने उसी से प्रश्न पूछा-तुम कैसा मानते हो? तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया- हम तो जन्म से जाति मानते हैं। तब स्वामी जी ने उस व्यक्ति से प्रतिप्रश्न किया- यदि कोई जन्म का ब्राह्मण व्यक्ति मुसलमान हो जाये तो उसकी जाति क्या होगी, क्या ब्राह्मण रहेगा? तो पूछने वाला निरुत्तर हो गया। जाति को आपने जन्म से मान रखा है, वह जन्म से होती नहीं है।

जहाँ तक कर्म का प्रश्न है, तो वे अच्छे-बुरे होते हैं और मनुष्य उन्हीं के अनुसार अच्छा-बुरा या यह या वह बनता है। वास्तविकता तो यह है कि कार्य से कोई ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा नहीं होता। वह नाम उसकी योग्यता का सूचक है और योग्यता अनुसार वह नाम बदल जाता है, इसी का नाम वर्ण व्यवस्था है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति योग्यता के अनुसार अपने को कहीं भी स्थापित कर सकता है। शूद्र को ब्राह्मण बनने का अधिकार है तथा ब्राह्मण को अपने कर्म छोड़ने पर शूद्र बनने की बाध्यता, यही वर्ण व्यवस्था है, जो मनु के शब्दों में इस प्रकार है जो आरक्षण का विकल्प भी है-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात् तथैव च।।

- डॉ. धर्मवीर

कुछ तड़प–कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

असहिष्णुता का मानवीय रोग:- इन दिनों भारत में असहिष्णुता के मानवीय महारोग पर बड़ा विवाद हो रहा है। अनादि ईश्वर के अनादि ज्ञान वेद के एक प्रसिद्ध मन्त्र में ईश्वर से बल, तेज, ओज, मन्यु व सहनशीलता आदि सद्‌गुणों की प्रार्थना की गई है। यह मन्त्र महर्षि दयानन्द ने आर्याभिविनय आदि पुस्तकों में दिया है। इससे स्पष्ट है कि असहनशीलता का महारोग मानव जाति के लिए घातक है। हिन्दू हो, मुसलमान हो या ईसाई, सबको इस मानवीय महारोग के कारण को जानकर इसका निवारण करना चाहिये।

हजरत मुहम्मद को तीन खलीफा हत्यारों ने मार डाला। मारने वाले काफिर नहीं थे। नमाजी मुसलमानों ने उनकी जान ले ली। क्या यह असहनशीलता नहीं थी? इस इतिहास से मुसलमानों ने क्या सीखा? वीर रामचन्द्र व वीर मेघराज की हत्या करने वाले हिन्दू ही थे। उनका दोष दलितोद्धार था। पं. लेखराम जी का वध करने वाले इस कुकृत्य पर आज भी इतराते हैं। क्या यह असहिष्णुता को बढ़ावा देने वाला कुकृत्य नहीं था? महात्मा गाँधी ने महाशय राजपाल द्वारा प्रकाशित रंगीला रसूल पर विपरीत टिप्पणी करके असहिष्णुता को उत्तेजित किया या नहीं? काशी के राजा काशी शास्त्रार्थ के अध्यक्ष थे, परन्तु सभा विसर्जित राजा ने नहीं की। सभा विसर्जित करने वालों की कृपा से हुल्लड़ मचा। इस असहिष्णुता पर किसने पश्चात्ताप किया? चलो! जनूनी राजनेताओं को इतनी समझ तो आ गई कि असहिष्णुता एक महामारी है। गुरु अर्जुनदेव जी से वीर हकीकतराय व स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तक सब असहिष्णुता के शिकार हुए।

आज के संदर्भ में:- आर्य समाज की वेदी से और नामधारी आर्य शिक्षा संस्थाओं में व्याख्यान का एक विषय चल पड़ा है- **'आज के संदर्भ में महर्षि दयानन्द के विचारों की प्रांसगिकता'**। महर्षि दयानन्द वेद को अनादि ईश्वर का अनादि ज्ञान मानते हैं। ऋषि सार्वभौमिक अटल अनादि नित्य ईश्वरीय सिद्धान्तों के प्रसारक-प्रचारक थे। उनके विचारों और उनके दर्शन की आज के युग में प्रासंगिकता पर भाषणबाजी क्या उचित है? मुझे जब कभी इस पर बोलने को कहा गया, मैंने इस विषय को हास्यास्पद बताया। क्या कभी किसी ने यह प्रश्न उठाया- "आज के युग में सूर्य की, जल की, वायु की, अग्नि की, अन्न की, व्यायाम की, विश्राम की, सरलता की,सत्य भाषण की, सेवा की, स्वच्छता की क्या प्रासंगिकता है? अनादि काल से इन पदार्थों व सद्‌गुणों की महिमा मनुष्य जानता है। इनके बिना मानव समाज व प्राणी क्या जी सकते हैं? इनकी प्रासंगिकता पर भाषण की तुक ही क्या?"

सूर्य गतिशील है:- यह सन् १९२२-१९२३ की घटना है। ख्वाजा हसन निजामी देहलवी ने अपनी एक पुस्तक के टाईटल पेज पर अन्त में अपनी पुस्तकों का विज्ञापन दिया। मैंने वह पूरी पुस्तक विज्ञापन सहित पढ़ी। एक पुस्तक के विज्ञापन में लिखा था- दो भागों में छपी इस पुस्तक में आर्यों की इस मान्यता का **'दन्दान शिकन'** दाँत तोड़ने वाला उत्तर दिया गया है कि पृथ्वी आदि ग्रह, उपग्रह गति करते हैं। निजामी जी ने इतराते हुए इस्लामी मान्यता की घोषणा की कि भूमि, चाँद, सूर्य आदि सब ग्रह उपग्रह गतिहीन हैं। इनमें से कोई भी गति नहीं करता।

मैं महर्षि दयानन्द की विश्वव्यापी दिग्विजय पर कहीं व्याख्यान देने के लिए निकला। अपने साथ डॉ. गुलाम जेलानी जी की लोकप्रिय पुस्तक लेता गया। इसमें बड़े गर्व से यह लिखा है कि हर्बल ने सूर्य को गतिशील सिद्ध किया है, तो उसने कोई विशेष तीर नहीं चलाया। यह दृष्टिकोण कुरान में पहले से है। वह डंके की चोट से कुरान में धरती व सूर्य आदि ग्रहों की गति की घोषणा करता है। मौलाना को ऋषि दयानन्द को धन्यवाद देना चाहिये। ऋषि के प्रादुर्भाव से कुरान में वेद के सब सत्य सिद्धान्त दिखाई देने लगे। पं. चमूपति जी ने लिखा है- **'है वक्त दयानन्द शजाअत के धनी का'**।

पं. भगवद्दत्त शोध शताब्दी वर्ष:- कुछ वर्ष पूर्व श्री अजय आर्य ने मुझे बताया था कि विश्व पुस्तक मेले में विदेशी आर्य विद्वानों में से पं. भगवद्दत्त जी के साहित्य की सर्वाधिक माँग करते हैं। पुस्तक मेला तो इस वर्ष भी है। यह वर्ष पं. भगवद्दत्त शोध शताब्दी वर्ष है। आर्य समाज की सब संस्थायें सोई पड़ी हैं। परोपकारिणी सभा ने पण्डित

भगवद्दत्त शोध शताब्दी वर्ष पर कुछ पठनीय साहित्य प्रकाशित करके पण्डित जी को सच्ची श्रद्धाञ्जलि दी है। ऋषि के पत्र व्यवहार का सभा ने एक नया संस्करण प्रकाशित करके जहाँ हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया है, वहाँ आर्य समाज का सिर भी ऊँचा कर दिया है। इस ग्रन्थ का सम्पादन करते हुए माननीय डॉ. वेदपाल जी ने जो श्रम व तप किया है, उसे शब्दों में बता पाना कठिन है। अंग्रेजी में लिख गये एक पत्र में एक अशुद्ध शब्द की ओर इस सेवक ने उनका ध्यान खींचा।

वहाँ क्या होना चाहिए, इसके लिंए कई शब्दकोश देखे। अंग्रेजी के जाने-माने कई विद्वानों से सम्पर्क साधा। आपने भूल का शूल निकालकर ही चैन लिया। ऋषि के पत्र-व्यवहार पर बहुत काम करना होगा। एक युवा विद्वान् को कुछ कार्य सौंपा गया है। डॉ. वेदपाल जी के सामने भी एक योजना है। कुछ युवा ऋषि भक्तों ने राशि की व्यवस्था भी कर दी है। एक वर्ष के भीतर यह ग्रन्थ भी छप जायेगा।

ऋषि भक्त मथुरादास जी:- ऋषि के जिन अत्यन्त प्यारे शिष्यों व भक्तों की अवहेलना की गई या जिन्हें बिसार दिया गया, परोपकारी में उन पर थोड़ा-थोड़ा लिखा जायेगा। इससे इतिहास सुरक्षित हो जायेगा। आने वाली पीढ़ियाँ ऊर्जा प्राप्त करेंगी। आर्य अनाथालय फीरोजपुर के संस्थापक और ऋषि जी को फीरोजपुर आमन्त्रित करने वाले ला. मथुरादास एक ऐसे ही नींव के पत्थर थे। उनका फोटो अनाथालय में सन् १९७७ तक था। मुझे माँगने पर भी न दिया गया। अब नष्ट हो गया है। आप मूलत: उ.प्र. के थे। आप अमृतसर आर्य समाज के भी प्रधान रहे। मियाँ मीर लाहौर छावनी में भी रहे। आपका दर्शनीय पुस्तकालय कहाँ चला गया? स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने इसे देखा था। आप जैनमत के अच्छे विद्वान् थे। आप हिन्दी, उर्दू दोनों भाषाओं के कुशल लेखक थे। आपने ऋषि जी की अनुमति के बिना ही ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का सार छपवा दिया। पंजाब में हिन्दी भाषा के प्रचार व पठन पाठन के लिए पाठ्य पुस्तकें भी तैयार कीं। इनका जैनमत विषयक बहुत-सा साहित्य अप्रकाशित ही रह गया। सेवानिवृत्त होने के बाद अपने पैतृक ग्राम सहारनपुर जनपद में रहने लगे। जिस आर्य अनाथालय की देश भर में धूम रही है, राजे-महाराजे जिसे दान भेजते थे, उसके संस्थापक महाशय मथुरादास का नाम ही आर्य समाज भूल गया। वह आरम्भिक युग के आर्य समाज के एक निर्माता थे।

इन्होंने ऋषि जी को अन्तिम दिनों एक सौ रुपये का मनीआर्डर भेजा था। महर्षि के अन्तिम हस्ताक्षर इसी मनीआर्डर फार्म के टुकड़े पर हैं। यह मनीआर्डर मथुरादास जी ने भेजा था, स्वामी ईश्वरानन्द जी ने नहीं। डॉ. वेदपाल जी के अथक प्रयास से इस भूल का सुधार हो गया। इसके लिए हम डॉ. वेदपाल जी तथा सभा- दोनों को बधाई देते हैं।

सम्मान के लिए आभार:- मुझे सूचना दी गई कि ऋषि मेले पर कोई ऋषि भक्त मेरा जी भर कर सम्मान करना चाहते हैं। वह कौन हैं, यह पता न चल सका। सम्मान तो मेरा अनेक बार हुआ, परन्तु मैंने माँग कर कभी सम्मान नहीं पाया। मेरे परिवार ने, मेरे निकटस्थ मित्रों ने भी मेरे सम्मान के लिए कभी किसी को नहीं कहा। इस सम्मान का एक ऐतिहासिक महत्त्व है। हरियाणा में ऋषि जी केवल रेवाड़ी आमन्त्रित किये गये। इतिहास में उपेक्षित उस रेवाड़ी महेन्द्रगढ़ के आर्यों ने मेरा इतना बड़ा सम्मान किया जो हरियाणा में कभी किसी ने सोचा तक नहीं था। विशेष बात यह है कि यह सम्मान युवकों ने किया, किसी सभा संस्था ने नहीं। आचार्य विरजानन्द जी ने इस पर जो टिप्पणी की, वह वही बतायें तो अच्छा रहेगा। उन आर्यवीरों की सेवायें परोपकारिणी सभा को सदा प्राप्य हैं। मुझे यह भी कहा गया कि यह राशि आप दान में नहीं देंगे। दान तो सबको करना ही चाहिये, फिर भी मैंने आदेश का पालन करके यह राशि सुरक्षित रख ली। यह सम्मान उनका है, जिन्होंने मेरा निर्माण किया।

दयानन्द बावनी और उसके रचयिता महाकवि दुलेराय जी :- महाकवि दुलेराय काराणी भुज-कच्छ में जन्मे एक जैनी समाज सेवी सज्जन हुए हैं। वे गुजराती तथा हिन्दी के जाने माने कवि थे। आपने गाँधी जी पर गुजराती भाषा में बावनी लिखी। आपने एक आर्यसमाजी मित्र श्री वल्लभदास की सत्प्रेरणा से दयानन्द बावनी नाम से एक उत्तम काव्य रचा, जिसे सोनगढ़ गुरुकुल से प्रकाशित किया गया। गुजरात के प्रसिद्ध आर्यसमाजी सुधारक शिवगुण बापू जी भी भुज-कच्छ में जन्मे थे। अहमदाबाद में महाकवि जी श्री शिवगुण बापू जी से मिलने उनके निवास पर प्राय: आते-जाते थे। दयानन्द बावनी का दूसरा संस्करण पाटीदार

पटेल समाज ने छपवाया था। इसका प्राक्कथन कवि ने ही लिखा था। इसके विमोचन के अवसर पर आप घाटकोपर मुम्बई पधारे।

शिवगुण बापूजी के परिवार की तीन पीढ़ियाँ आज भी इस काव्य को सपरिवार भाव-विभोर होकर जब गाती हैं तो एक समा बँध जाता है। इस वर्ष ऋषि मेला पर शिवगुण बापूजी के पौत्र श्री दिलीप भाई तथा उनकी बहिन नीति बेन ने बावनी सुनाकर सबको मुग्ध कर दिया। इसके प्रकाशन की बड़ी जोरदार माँग उठी। श्री डॉ. राजेन्द्र विद्यालङ्कर ने यह दायित्त्व अपने ऊपर लिया है। अगले वर्ष के ऋषि मेला पर श्री शिवगुण बापू की छोटी पौत्री प्रीति बेन से जब आर्यजन बावनी सुनेंगे तो वृद्ध आर्यों को कुँवर सुखलाल जी की याद आ जायेगी।

महाकवि दुलेराय ने महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि में लिखा है:-

वैदिक उपदेश वेश, फैलाया देश देश
क्लेश द्वेष को विशेष मार हटाया।
सत्य तत्त्व खोल खोल, अनृत को तोड़ तोड़
तेरे मन्त्रों ने महाशोर मचाया।
धन्य धन्य मात तात, तेरा अवतार
होती है भारत मात आज निहाला।

'आंध्रभूमि' के सम्पादक श्री शास्त्री जी:- इस बार ऋषि मेले से ठीक पहले कुछ दुःखद घटनायें घटीं, इस कारण सभा से जुड़े सब जन कुछ उदास थे, तथापि मेले पर दूर दक्षिण से 'आंध्रभूमि' के सम्पादक श्री म.वी.र. शास्त्री जी तथा युवा विद्वान् पं. रणवीर शास्त्री जी के तेलंगाना से अजमेर पधारने पर सब हर्षित हुए। मान्य शास्त्री जी सम्पादक 'आंध्रभूमि' एक कुशल लेखक हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी पर आपके ग्रन्थ ने धूम मचा दी है। अब आप राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने व नवचेतना के संचार के लिए वीर भगतसिंह पर एक ग्रन्थ लिखने में व्यस्त हैं। आर्य जनता की इच्छा है कि इसका विमोचन अगले ऋषि मेला पर हो।

स्थिर निधियाँ:- इस वर्ष सभा ने कई महत्त्वपूर्ण व उच्चस्तरीय पुस्तकें प्रकाशित करके ठोस सेवा की है। आचार्य सोमदेव जी का 'शंका समाधान' पुस्तक रूप में छप चुका है। भारत सरकार द्वारा छपी एक पुस्तक में महर्षि पर प्रहार किया गया। सभा ने आर्यों की माँग पर तत्काल **'इतिहास की साक्षी'** पुस्तक छापकर इसका सप्रमाण उत्तर दे दिया। महर्षि का पत्र-व्यवहार दो भागों में और लोकोपयोगी ऋषि जीवन नवयुग की आहट भी ऋषि मेला पर छपे। खूब बिके। इस बार ऋषि मेला पर सब प्रकाशकों की बिक्री इतनी हुई कि कई पुस्तकों का स्टाक समाप्त हो गया।

आर्य जनता यदि यह चाहती है कि पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द व पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का साहित्यिक मिशन फूले-फले तो आर्य सज्जनों को परोपकारिणी सभा में साहित्य प्रकाशन के लिए स्थिर निधियाँ स्थापित करनी चाहिये। सभा के पास इस समय कई जाने-माने विद्वान् व उत्साही युवा लेखक गवेषक भी हैं। मैं गत वर्ष मुजफ्फरनगर से एक स्थिर निधि की राशि लाया। अमरीका से श्री मदनलाल कान्तादेवी स्थिर निधि प्राप्त हुई। श्रीमती वेद जिज्ञासु स्थिर निधि, श्री रामभज जी मदान व श्री मनीष गुलाटी जी दिल्ली की स्थिर निधियों के पश्चात् इस वर्ष छह और स्थिर निधियाँ लाने का मेरा प्रयास रहेगा। सब भाषाओं में हमारा श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित होते रहना चाहिये।

अंधविश्वास पर चुप्पी क्यों?:- मन्त्रिमण्डल ने १५ सितम्बर १९४८ को हैदराबाद में पुलिस कार्यवाही का निर्णय लिया था। सरदार पटेल ने १३ को सेना को अपना कार्य करने का आदेश दिया। उस समय का अंग्रेज सेनापति १५ को ही सेना भेजने पर अड़ा रहा। जब सरदार अपने निश्चय पर अडिग रहे तो गोरे सेनापति ने हिन्दुओं के अंधविश्वास का मिजाईल चलाकर सरदार का मनोबल गिराने की चाल चली। उसने कहा, "१३ का अंक अशुभ होता है।" लौह पुरुष पटेल बोले, "तुम्हारे लिए होगा। मेरे लिए नहीं। मैं गुजराती हूँ। गुजरात में १३ का अंक शुभ माना जाता है"। सेना ने उसी दिन हैदराबाद को चारों ओर से घेरकर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। यह घटना सरदार के रियासती विभाग के सचिव श्री मेनन ने अपने ग्रन्थ में दी है।

अब प्रात: से सायं तक टी.वी. पर कई बाबे, कई तिलकधारी ज्योतिषी, काले कुत्ते व शुभ अंकों वाले अंधविश्वास परोसते रहते हैं। हिन्दू-हिन्दू की रट लगाने वाले नेता, प्रवक्ता, साक्षी महाराज की बयान मण्डली हिन्दुओं के अंधविश्वासों पर चुप्पी साधे रहते हैं। सब दलों के नेता तन्त्र-मन्त्र में विश्वास करते हैं। ये अंधविश्वास देश

को डुबोने वाले हैं।

पं. दीनदयाल जी को कहना पड़ा:- पं. दीनदयाल उपाध्याय एक त्यागी, तपस्वी व सरल नेता थे। उन जैसा राजनेता अब किसी दल में नहीं दिखता। वह जनसंघ के मन्त्री के रूप में जगन्नाथपुरी गये। वहाँ के मन्दिर में दर्शन करने पहुँचे तो पुजारियों ने चप्पे-चप्पे पर यहाँ पैसे चढ़ाओ, यहाँ भेंट धरो, इसका यह फल और बड़ा पुण्य मिलेगा आदि कहना शुरू किया। जब दीनदयाल जी से बाहर आने पर पत्रकारों ने मन्दिर की इस यात्रा व भव्यता के बारे में प्रश्न पूछे तो आपका उत्तर था, ''**जब मैं मन्दिर में प्रविष्ट हुआ तब पक्का सनातन धर्मी था, अब बाहर निकलने पर मैं कट्टर आर्यसमाजी हूँ।**'' उनका यह वक्तव्य तब पत्रों में छपा था, जिसे उनके नाम लेवा अब छिपा चुके हैं, पचा चुके हैं। हिन्दू समाज के महारोगों की औषधि केवल दीनदयाल जी की यह स्वस्थ सोच है। दुर्भाग्य से हिन्दू अपने रोगों को रोग ही नहीं मानता।

सन् १८५७ का विप्लव:- भारत के प्राय: सब नेता अंग्रेजों के स्वर में स्वर मिलाकर सन् १८५७ के विप्लव को Mutiny (गदर) ही लिखते व कहते आये हैं। महर्षि दयानन्द प्रथम भारतीय नेता व विचारक थे, जिन्होंने सन् १८७८ में अपने जालंधर के एक भाषण में इसे विप्लव कहकर लखनऊ में अंग्रेजों के अत्याचारों की घोर निन्दा की। वीर सावरकर का ग्रन्थ Our First war of Independence तो बहुत बाद में आया। आर्य समाज ऋषि-जीवन की इस घटना को मुखरित Highlight न करने का दोषी है। केवल पं. लेखराम जी, पं. लक्ष्मण जी के ग्रन्थों में यह छपी मिलती है। मैं आर्य मात्र से इसको मुखरित करने की विनती करता हूँ।

सर सैयद अहमद खाँ ने भी '**गदर के असबाब**' पुस्तक लिखी। पं. कन्हैयालाल अमेठी ने भी उर्दू में इस पर एक ग्रन्थ लिखा, जिसके कई संस्करण छपे थे। एक संस्करण पर '**मुंशी कन्हैयालाल**' छपा पढ़कर मैंने कन्हैयालाल अलखधारी जी को इसका लेखक समझ लिया। यह मेरी भूल थी। मिलान किया तो पता चला कि पृष्ठ संख्या बदल गई है, लेखक कन्हैयालाल ही हैं। ऐसी पुस्तकें और भारतीय लेखकों ने भी लिखीं। ऋषि जी के साहस, शौर्य का मूल्याङ्कन तो कोई करे।

गुजरात का वह जैन पुस्तकालय:- गुजरात यात्रा में हम अहमदाबाद के निकट एक आधुनिकतम जैन पुस्तकालय देखने भी गये। उसमें किन-किन आर्य विद्वानों का साहित्य है, यह भी देखा। पुस्तकालय के व्यवस्थापक डॉ. हेमन्त कुमार जी ने कहा, ''**हम अन्य-अन्य विचार वालों का सहित्य भी रखते हैं। क्रय भी करते हैं और कोई भेंट करे तो उसे भी स्वीकार करते हैं।**'' मैंने तत्काल '**कुरान: सत्यार्थप्रकाश के आलोक में**' की एक प्रति पुस्तकालय को भेंट कर दी। जब तक यह लेख हमारे पाठकों के हाथों में पहुँचेगा, तब तक आर्य सामाजिक साहित्य के कई महत्त्वपूर्ण छोटे-बड़े ग्रन्थ उनको पहुँचा दिये जायेंगे। यह हमारे द्वारा वहाँ पहुँचाये गये, साहित्य की पहली खेप है। अभी और साहित्य पहुँचाने की व्यवस्था की जा रही है। महर्षि जी का पत्र-व्यवहार, ऋषि के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ, पं. चमूपति, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री धमेन्द्र 'जिज्ञासु', श्रद्धेय पं. लक्ष्मण जी तथा राजेन्द्र 'जिज्ञासु' का बहुत-सा साहित्य भेंट स्वरूप वहाँ प्राप्त हो चुका होगा। श्रीमती प्रतिभा सत्यव्रत जी ने इस कार्य में प्रशंसनीय सहयोग किया है। धन्यवाद का शब्द बहुत छोटा है। हम मनोभाव कैसे व्यक्त करें? अन्य बन्धु भी बेटी प्रतिभा का अनुकरण करेंगे तो धर्मलाभ के भागीदार होंगे।

इनको कुछ नहीं कहा जा सकता:- दिल्ली के पड़ोस से श्री विजय आर्य नाम के एक युवक ने हमें '**आर्य संदेश**' के नवम्बर २०१५ के दूसरे अंक में ''**सरदार पटेल**'' पर छपे लेख को पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय करने को कहा है। प्रश्नकर्त्ता ने कहा है कि लोकप्रिय पुस्तक 'श्रुति सौरभ' में पं. शिवकुमार जी ने सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन की जो प्रेरणाप्रद घटना दी है, इसे तोड़-मरोड़ कर 'आर्य सन्देश' के लेखक ने दिया है। क्या यही धर्म प्रचार है? हमारा निवेदन है कि यह ठीक है कि सत्य कथन को, प्रेरक इतिहास को प्रदूषित करना पाप है, परन्तु हम इन लोगों को कुछ नहीं कह सकते। ये नहीं सुधरेंगे। '**गुरुमुख हार गयो जग जीता**' इनको कौन रोके? उस समय सरदार के पास महावीर त्यागी बैठे थे। यह लेखक एक क्रान्तिकारी को घसीट लाया है। मणिबेन को इस लेखक ने वहीं चरखा चलाने- सूत कातने पर लगा दिया है। पं. शिवकुमार जी को इतिहास का व्यापक ज्ञान था। इन उत्साही लेखकों को तो अपना एक इतिहास प्रदूषण महामण्डल रजिस्टर्ड करवा लेना चाहिये।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, **जो मौलिक व अप्रकाशित** हों। **अत: सभी लेखकों से** निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्यों का महाकुम्भ : ऋषि-मेला अजमेर
(२०,२१ व २२ नवम्बर २०१५)

- श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

ऋषि-मेले में काफी लोग मेले की तिथियों से एक दो दिन पहले से ही आने लगते हैं। आगन्तुकों को ऋषि-उद्यान में पहुँचने पर कोई असुविधा न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए गुरुकुल के ब्रह्मचारी, राजस्थान आर्य वीर दल के आर्य वीर तथा सभा के सदस्य एवं पदाधिकारी हर समय उद्यत रहते हैं । किसी श्रोता, आगन्तुक को अस्वस्थता की स्थिति में असुविधा न हो इस दृष्टि से, सभा की ओर से संचालित आयुर्वैदिक धर्मार्थ चिकित्सालय सरस्वती भवन में खुला हुआ है, जिसमें सुयोग्य चिकित्सक **डॉ. रमेशमुनि जी** अपनी नि:शुल्क सेवाएँ देते हैं।

ऋषि-मेले का आरम्भ होने से पूर्व ही १९ नवम्बर को माननीय **डॉ. वेदपाल जी, डॉ. सूर्या जी चतुर्वेदा,** कन्या गुरुकुल शिवगंज की आचार्या, **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी**,अबोहर, **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आय** मेरठ, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री **श्री देशपाण्ड** तथा वैदिक गर्जना के सम्पादक **डॉ. नयन कुमार** आचार्य, गुरुकुल झज्जर के आचार्य **विजयपाल जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालङ्कार, श्री पं. इन्द्रजित् देव** यमुनानगर, **पं. भूपेन्द्र सिंह** एवं **पं. लेखराज जी, पं. महीपाल जी** मथुरा, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति **डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी,** आन्ध्रभूमि हैदराबाद के सम्पादक **श्री एम.वी.आर. शास्त्री** आदि अजमेर पहुँच गए थे। बड़ी संख्या में पधारे वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की उपस्थिति से भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ी। मुख्य कार्यक्रम के लिए आनासागर के सुरम्य तट पर स्थित ऋषि उद्यान के विशाल प्रांगण (लॉन) में स्वामी ओमानन्द आश्रम के ठीक सामने विशाल एवं भव्य पण्डाल बनाया गया। ऋषि-उद्यान में स्थित सभी भवन एवं पूरा परिसर बड़ी भव्यता के साथ सजाया गया और विद्युत के प्रभाव से सारी शोभा द्विगुणित हो गयी। प्रांगण के सरस्वती भवन की ओर के भाग में पुस्तक विक्रेताओं एवं आयुर्वैदिक औषधि विक्रेताओं के स्टॉल लगे थे। वैदिक पुस्तकालय, अमरस्वामी प्रकाशन संस्थान, आर्यप्रकाशन, मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली, गुरुकुल झज्जर वैदिक साहित्य प्रकाशन आदि पुस्तक विक्रेताओं के पण्डाल सुव्यवस्थित ढंग से सजे थे। श्रोताओं के रूप में भारत भर से पधारे आर्यजनों ने बड़ी मात्रा में वैदिक साहित्य क्रय किया।

यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में आर्य जगत् में वेद के प्रतिष्ठित विद्वान् **श्री पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश** आमन्त्रित थे। ऋषि-मेले के सिलसिले में ऋषि उद्यान में ऋग्वेद पारायण यज्ञ १६-११-२०१५ से चल रहा था।

शुक्रवार २०-११-२०१५ को प्रात: ७ बजे ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ ऋषि-मेला आरम्भ हुआ। पूरी यज्ञशाला एवं यज्ञशाला के बाहर चारों ओर का स्थान श्रोताओं, सहभागियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों एवं देवियों से खचाखच भरा था। यजमानों के आसन पर **श्री जयसिंह गहलोत** अपने परिवार सहित विराजमान थे। **श्री दिनेश नवालजी** भी सपरिवार उपस्थित थे। वेद पाठ का कार्य गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया तथा यज्ञ के ब्रह्मा का दायित्व **श्री पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश** ने बहुत कुशलता से सम्पादित किया।

यज्ञ के उपरान्त वेद प्रवचन **आचार्य सत्यजित् जी** का हुआ। उन्होंने आर्याभिविनय ग्रन्थ के द्वितीय पुष्प से एक वेद मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की।

प्रात:कालीन वेद-प्रवचन के पश्चात् ओ३म् ध्वजोत्तोलन का कार्य प्रात:काल लगभग १०.३० बजे हुआ। सरस्वती भवन के प्रांगण में श्रोतागण (सज्जन एवं देवियाँ), वानप्रस्थी, संन्यासीगण, सभा के ट्रस्टीगण और आमन्त्रित विद्वान् उपस्थित थे। आर्यवीरों की एक टोली शस्त्र-सम्पन्न होकर सभा के प्रधान **श्री डॉ. धर्मवीर जी** को आदरपूर्वक लेकर ध्वजस्थल पर आई । बहुत उल्लासमय वातावरण में और पूरी उत्सव धर्मिता के साथ ध्वजारोहण का कार्यक्रम माननीय प्रधान जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। ध्वजगीत के

पश्चात् अपने उद्बोधन में श्रद्धेय प्रधान जी ने कहा कि वर्तमान समय में संसार में बहुत कुछ तनावपूर्ण, अन्यायपूर्ण और विनाशकारी घटित हो रहा है। इस सबसे बचने का एक ही उपाय है- असत्य और अन्याय का विरोध और सत्य तथा न्याय का पक्ष लेना। यह शिक्षा ऋषि दयानन्द एवं वेद से मिलती है, अत: ऋषि का उद्घोष **'वेदों की ओर लौटो'** बहुत प्रासंगिक है। वेद में गोमांस भक्षण नहीं, गो की रक्षा का विधान है। मानव मात्र की भलाई की बात केवल वेद ही करता है।

ध्वजारोहण के कार्यक्रम के पश्चात् सरस्वती भवन में वेद गोष्ठी आरम्भ हो गयी, जिसका संचालन **श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री** ने किया। वेद गोष्ठी का विवरण अलग से प्रकाशित किया जायेगा।

मुख्य पण्डाल में वेद प्रचार का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। ईश्वर भक्ति के भजन **श्री पं. भूपेन्द्र सिंह एवं पं. लेखराज जी** ने प्रस्तुत किये। विद्वानों ने आर्य समाज की वर्तमान समय में प्रासंगिकता पर अपने विचार रखे। जिन विसंगतियों एवं दोषों को दूर करने के लिए आर्य समाज की स्थापना हुई थी, वे अब भी व्यापक रूप से विद्यमान है, अत: आर्य समाज प्रासंगिक है और जब तक ये दोष, पाखण्ड, अन्धविश्वास समाज में पसरे हुए हैं, तब तक आर्य समाज प्रासंगिक ही रहेगा।

शुक्रवार २०-११-२०१५ को अपराह्न (२ बजे से ५ बजे) वाले सत्र में चर्चा का विषय था- वर्तमान समय में आर्य समाज की दशा और दिशा। **श्री सत्येन्द्र सिंह आय** कार्यक्रम के संचालक थे। उड़ीसा से पधारे **श्री स्वामी सुधानन्द जी, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी,** महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री **श्री देशपाण्डे जी एवं पं. रामनिवास जी गुणग्राहक** ने अपने विचार प्रस्तुत किये। वक्ताओं ने अन्य बातों के अतिरिक्त यह बात बल देकर कही कि आर्य समाज के संगठन में शिथिलता हो सकती है, परन्तु भौतिकवाद के पीछे अन्धी दौड़ ने लोगों को संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों से विमुख किया है। आर्य समाज वास्तव में अभ्युदय एवं नि:श्रेयस् को साथ-साथ प्राप्त करने के विधान का पक्षधर है। **आचार्य विजयपाल जी** ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

२०-११-२०१५ को ही रात्रिकालीन सत्र में 'राष्ट्रीय आन्दोलन में ऋषि दयानन्द की भूमिका' पर वक्ताओं ने विस्तार से प्रकाश डाला। १९ वीं शताब्दी में स्थूल रूप से तो देश की स्वतंत्रता का आन्दोलन ही प्रमुख था, परन्तु ऋषिवर ने समाज-सुधार, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, सबको वेद पढ़ने का अधिकार, पाखण्ड-खण्डन आदि प्रत्येक कार्य को एक आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाया। मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं आर्ष साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित **श्री डॉ. वेदपाल जी** ने अपने विचार प्रस्तुत किये, जिन पर श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गए।

शनिवार २१-११-२०१५ को प्रात:कालीन सत्र (९ से ९-३० बजे) में यज्ञ सम्पन्न हुआ एवं वेदोपदेश **डॉ. वेदपाल जी** का हुआ। आपने ऋग्वेद के उन्हीं मन्त्रों के सन्दर्भ में उपदेश किया, जिनसे आहुतियाँ दी जा रही थीं। मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए वेद में प्रतिपादित किया गया है कि वह जीवन में क्षुधा, लोभ, जुआ, तन्द्रा, मात्र कल्पना लोक में विचरण तथा यथार्थ की उपेक्षा और स्त्री-काम्यता के कारण होने वाले पापों से बचे।

पूर्वाह्न के सत्र में विद्वान् वक्ताओं ने 'संस्कृत एवं संस्कृति' विषय पर विस्तार से चर्चा की। बिना संस्कृति के श्रेष्ठता प्राप्त नहीं हो सकती। सीखा हुआ व्यवहार ही संस्कृति है। संस्कारों से इसका निर्धारण होता है और व्यवहार के द्वारा इसे अक्षुण्ण बनाये रखा जा सकता है । संचालन का कार्य **आचार्य सोमदेव जी** ने किया।

अपराह्न वाला सत्र आर्य युवक सम्मेलन के लिए निश्चित था। **श्री राजवीर आय** (मुरादाबाद) ने सत्र का संचालन किया। **कु. आरुषि आर्य, डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा, श्री श्रुतिशील झँवर,** निदेशक श्री राम मिल्स मुम्बई ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी का मत था कि युवाओं को रचनात्मकता एवं सकारात्मक सोच की ओर प्रेरित किया जाये। इसी सत्र में प्रसिद्ध इतिहासज्ञ **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** को ऋषि मिशन की आजीवन सेवा करने के लिए आजीवन उत्कृष्ट-सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शाल, श्रीफल, प्रशस्तिपत्र पत्र के अतिरिक्त एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि देकर उन्हें सम्मानित किया गया। उनके द्वारा जीवन भर किए गए कार्यों पर **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य** ने विस्तार से प्रकाश डाला। श्रोताओं ने करतल-ध्वनि के द्वारा कार्यक्रम को उल्लासमय बनाया।

वेद कंठस्थीकरण प्रतियोगिता सहित वेद, वेदोपदेश आदि के लिए परोपकारिणी सभा द्वारा प्रतिवर्ष दिये जाने वाले पुरस्कारों एवं छात्रवृत्तियों को प्रदान करने का विवरण अलग से प्रकाशित किया जाएगा।

''**महर्षि का पत्र-व्यवहार**'' ग्रन्थ का संशोधन कार्य **पं. विरजानन्द जी व माननीय डॉ. वेदपाल जी** के अथक प्रयास से पूरा हो सका। उत्तम साजसज्जा, अच्छा कागज और मुद्रण वाला यह ग्रन्थ सभा ने स्वयं प्रकाशित किया है। इसका विमोचन भी इसी सत्र में **श्री डॉ. धर्मवीर जी, श्री डॉ. वेदपाल जी एवं श्री ओममुनि जी** के करकमलों से सम्पन्न हुआ। हैदराबाद से 'आन्ध्र भूमि' के सम्पादक **श्री एम.बी.आर. शास्त्री** पधारे थे। उनका प्रेरणादायक उद्‌बोधन भी श्रोताओं को सुनने को मिला। महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों को उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की। **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने उनका धन्यवाद ज्ञापित किया।

रात्रिकालीन सत्र में भी आर्य समाज, वेद एवं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। विद्वान् वक्ता **पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश, डॉ. वेदपाल जी, डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. दिनेश शर्मा जी** ने अपने एतद्‌विषयक विचार प्रस्तुत किए। सभी कार्यक्रमों में श्रोताओं की उपस्थिति तीन चार हजार के बीच बनी रही। केरल, उड़ीसा,आन्ध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, उतरप्रदेश आदि राज्यों से एवं दिल्ली से बड़ी संख्या में आर्य सज्जनों एवं देवियों ने पधारकर और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

रविवार २२-११-२०१५ को प्रात:काल मुख्य कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ हुआ। यज्ञ में राजस्थान राज्य के लोकायुक्त **श्री सज्जनसिंह कोठारी** एवं सभा के कोषाध्यक्ष **श्री सुभाष नवाल** जी सपरिवार सम्मिलित हुए। ऋग्वेद पारायण यज्ञ की आज पूर्णाहुति थी। यज्ञशाला श्रद्धालुओं से खचाखच भरी थी। यज्ञ के पश्चात् वैदुष्यपूर्ण वेद-प्रवचन सभा प्रधान **श्री डॉ. धर्मवीर जी** का हुआ। सभा को आर्यजनों से तथा आर्यजनों को सभा से अपेक्षाएँ हैं। इनका सामञ्जस्य कैसे बने- इस विषय पर माननीय प्रधान जी ने बहुत तर्कसंगत बातें आर्यजनों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। सभी ने प्रधान जी के उद्‌बोधन को सराहा।

यज्ञशाला में तीनों ही दिन संचालन का कार्य **श्री आचार्य सोमदेव जी** ने किया। प्रभुभक्ति का एक गीत **श्री कल्याण वेदी जी** ने प्रस्तुत किया।

ऋषि-मेले के अवसर पर प्रतिदिन प्रात:काल ५ से ६.३०बजे के मध्य आगन्तुकों, श्रोताओं के लाभार्थ सूक्ष्म क्रियाओं, आसन-प्राणायाम, ध्यान एवं सन्ध्या का कार्यक्रम संचालित किया जाता है। **आचार्य सत्यजित् जी** के मार्गदर्शन में **आचार्य कर्मवीर जी** एवं **आचार्य सोमदेव जी** डेढ़ घण्टे के इस कार्यक्रम को बड़ी कुशलता से चलाते हैं।

रविवार २२-११-२०१५ के लिए दोपहर ११ बजे से १ बजे वाला सत्र **पं. भगवद्दत्त शोध शताब्दी** के रूप में मनाये जाने के लिए निर्धारित था। कार्यक्रम की अध्यक्षता **पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश** ने की। मुख्य वक्ता **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों-यथा वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास, भारतीय संस्कृति का इतिहास, सत्यार्थप्रकाश एवं महर्षि के पत्र व्यवहार पर उनके कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं उनके महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंनें यह भी बताया कि अंग्रेज सरकार पण्डित जी से भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के विरुद्ध बहुत कुछ लिखवाना चाहती थी, जिसे उन्होंने दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया। अपराह्न दो से पाँच बजे के मध्यवाला सत्र पाखण्ड-खण्डन वाले विषय को समर्पित था। **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य** एवं **श्री पं. सत्यानन्द जी वेदवागीश** ने पाखण्ड के विभिन्न रूपों की चर्चा की और उसका मुख्य कारण अज्ञान एवं लोभ को बताया।

ऋषि-मेले का अन्तिम सत्र धन्यवाद ज्ञापन का था, जिसमें **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य** ने सभा के द्वारा किये जा रहे कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभा के कार्य बहुत आयामी हैं, विस्तृत हैं एवं महत्त्वपूर्ण हैं, यह सभी मानते हैं और सभा यथाशक्ति कार्य कर रही है। सभा प्रधान **श्री डॉ. धर्मवीर जी** ने श्रोताओं, वक्ताओं एवं सभी प्रकार की व्यवस्था करने वालों का धन्यवाद किया। ऋषि-मेला निर्विघ्न सम्पन्न हुआ, इसके लिए प्रभु का धन्यवाद किया। अत्यन्त प्रसन्नतापूर्ण वातावरण में शान्तिपाठ के साथ ऋषि-मेला समाप्त हुआ।

- जागृति विहार, मेरठ, उ.प्र.

वह ऐतिहासिक गीत
"सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं"

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

श्री यतीन्द्र आर्य की उत्कट इच्छा से मैं कई मास से इस पूरे गीत की खोज में लगा रहा। जब कुँवर सुखलालजी पर विरोधियों ने प्राणघातक आक्रमण किया था, तब पता करने वालों के प्रश्न के उत्तर में इसका प्रथम पद्य बोला था। यह गीत कुँवर जी की रचना नहीं है- जैसा कि प्राय: हम सब समझे बैठे थे। यह किसी पंजाबी आर्य लिखित गीत है। इसके अन्त में 'धरम' शब्द से लगता है कि यह लोकप्रिय पंजाबी आर्य गीतकार पं. धर्मवीर की रचना है। कुछ पंक्तियाँ छोड़कर इसे परोपकारी की भेंट किया जाता है। यह लेखराम जी के बलिदान के काल में रचा गया था।

- जिज्ञासु

सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं।
झण्ड दुनिया में उनके गड़े हैं।।

एक लड़का हकीकत नामी,
सार जिसने धरम की थी जानी,
जग में अब तक है जिसकी निशानी,
सीस कटवाने को खुश खड़े हैं।
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं.......................

बादशाह ने कहा सब तुम्हारे,
राज दौलत खजाने हमारे
सुन हकीकत यह बोले विचारे,
हम तो इनसे किनारे खड़े हैं।
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं.......................

यह हकीकत को दौलत न भाई,
बल्कि आखिर को है दु:खदायी
कारुँ जैसे ने प्रीत बढ़ाई,
आ नरक में वे आखिर पड़े हैं।
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं.......................

गुरु गोविन्द के थे दो प्यारे,
गये रणभूमि में वे भी मारे
और जो छोटे थे जो न्यारे,
जिन्दा दीवार में वे गड़े हैं।
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं.......................

महर्षि दयानन्द प्यारे,
धरम कारण खा विष सिधारे
सुनके हिल जाते थे दिल हमारे,
ओ३म् जपते वे आगे बढ़े हैं।
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं.......................

लेखराम धरम का प्यारा,
जिसने धरम पर तन मन वारा
खाया जिस्म पर तेग कटारा,
उठ "धरम" तू याँ क्या करे है?
सीस जिनके धरम पर चढ़े हैं
झण्डे दुनिया में उनके गड़े हैं।।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

संस्कृत की शब्द-सम्पदा

- आचार्य आनन्दप्रकाश

संस्कृत भाषा महत्त्वपूर्ण है, यह हम कहते हैं, परन्तु क्यों इसको बहुत कम लोग जानते हैं? जब आप इस लेख को पढ़ लेंगे, तब इसका साक्षात्कार हो जायेगा। विद्वान् लेखक वर्तमान में आर्ष-शोध-संस्थान अलियाबाद, शामीरपेट, जि. रंगारेड्डी (तेलंगाना) में अध्ययन-अध्यापन में संलग्न हैं। - **सम्पादक**

संसार की सभी भाषाओं की जननी तथा संस्कृति और सभ्यता की संवाहिका देववाणी संस्कृत-भाषा के अद्‌भुत और विलक्षण गुणों पर आज सारा संसार मुग्ध है। यहाँ उसकी केवल एक ही विशेषता का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया जा रहा है। वह विशेषता है, उसके पदों की सुमहती सम्पदा और उनकी यौगिकता।

संस्कृत- पदों को दृष्टव्य व अव्यय इन दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। दृष्टव्य / विकारी शब्दों के पुन: दो भेद हैं- नाम और आख्यात। नाम पद सुबन्त होते हैं तथा आख्यात/क्रियापद तिङन्त।

अव्यय- उपसर्ग, निपात, कुछ कृत्प्रत्ययान्त, कतिपय तद्धितप्रत्ययान्त तथा कतिपय समस्त पद अव्यय होते हैं। इन सभी का मूल है धातु।

धातु से तिङ्प्रत्यय के योग से क्रियापद तथा कृत्प्रत्यय के योग से नाम या प्रातिपदिक बनते हैं, जिन्हें सामान्य भाषा में शब्द कहते हैं। प्रातिपदिक से सुप् प्रत्ययों के योग से पद बनते हैं। इसी प्रकार तिङ्प्रत्ययान्त धातुज शब्दों को भी पद कहते हैं।

अथाह शब्द भण्डार

एक-एक धातु से लाखों शब्द बनते हैं। यह संस्कृत की अनुपम विशेषता है। उदाहरण के लिए भू धातु को ही लेते हैं, जो धातुपाठ का प्रथम धातु है। 'भू' का सामान्य अर्थ है-होना।

संस्कृत में दस लकार हैं- लट्, लिट्, लुट् लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ, लुङ्, लृङ्। इनमें पञ्चम लकार 'लेट्' वेद में ही प्रयुक्त होता है। व्यवहार में प्राय: अप्रयुक्त है। लिङ् लकार के दो भेद हैं। एक- विध्यादिलिङ्, जिसे सामान्यतया विधिलिङ् बोलते हैं, दूसरा है- आशीर्लिङ्। इस प्रकार सामान्य व्यवहार में भी दस लकार आ जाते हैं।

प्रत्येक लकार में तीन पुरुष - प्रथम, मध्यम तथा उत्तम, और प्रत्येक पुरुष में तीन वचन होते हैं- एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। फलत: एक लकार के न्यूनतम ९ पद रूप हो जाते हैं। कहीं-कहीं रूप-भेद से यह संख्या बढ़ भी जाती है।

इस प्रकार लट् लकार में भवति, भवत:, भवन्ति, भवसि, भवथ:, भवथ, भवामि, भवाव:, भवाम:, - इत्यादि, शेष ९ लकारों में भी ९-९ रूप बनकर -९×१०=९० पद होते हैं ।

यह संख्या कर्तृवाच्य परस्मैपद की है। यदि धातु आत्मनेपदी भी हो तो- व्यतिभवते, व्यतिभवेते, व्यतिभवन्ते इत्यादि ९० रूप और होंगे। इसी प्रकार कर्मवाच्य में भी ९० रूप होंगे।

'चाहना' अर्थ में धातु से 'सन्' प्रत्यय लगता है। होना चाहता है- बुभूषति। देश -विदेश की किसी भी भाषा में यह विशेषता नहीं है। Wants to go, Wants to do, Wants to be या जाना चाहता है, करना चाहता है, होना चाहता है- इत्यादि वाक्य बनते हैं। भिन्न रूप में प्रयोग सम्भव ही नहीं, परन्तु संस्कृत में दोनों तरह के प्रयोग सम्भव हैं- 'गन्तुम् इच्छति' भी 'जिगमिषति' भी। इसी प्रकार 'कर्तुम् इच्छति' - परस्मै. और आत्मनेपदों के १० लकारों के ये १८० रूप बनते हैं। इसके भी कर्मवाच्य आदि में 'बुभूष्यते'- इत्यादि ९०-९० रूप बनते हैं।

बार-बार होना या 'बहुत होना' अर्थ में धातु से यङ् प्रत्यय होता है (धातोरेकाचो.)। यह उन एकाच धातुओं से होता है, जिनका आदि वर्ण हल/व्यञ्जन हो। यथा - भ् + ऊ = भू, प + अठ्=पठ्। इससे भी 'बोभूयते' इत्यादि ९० रूप बनते हैं।

इस यङ् का लुक् (=लोप) हो जाने पर 'बोभवीति' तथा 'बोभोति' जैसे एक वचन के दो रूपों के कारण ३०+९०=१२० रूप बनते हैं। फिर इनकी कर्मवाच्य, भाववाच्य, कर्मकर्तृवाच्य आदि प्रक्रियाओं के भी दसों लकारों में रूप चलते हैं।

प्रेरणा अर्थ में धातु से णिच् - प्रत्यय होता है। ऐसे धातु को णिजन्त कहते हैं । इससे प्रेरणार्थक या णिजन्तरूप भावयति, भावयत:, भावयन्ति आदि परस्मैपद में तथा भावयते, भावयेते, भावयन्ते आदि आत्मनेपद में होते हैं। इस प्रकार १० लकारों के ये रूप ९०+९०=१८० हो जाते हैं।

सन्, यङ्, णिच् की प्रक्रियाओं में दो या तीनों प्रक्रियाओं के मिल जाने पर पुनः ९०-९० रूप बनते जाते हैं। जैसे - पुनः पुनः भवितुमिच्छति = 'बोभूयिषते' इत्यादि। भावयितुमिच्छति= 'विभावयिषति' इत्यादि। पुनः पुनः भावयितुमिच्छति= 'बोभूययिषति'।

वेद में व्यत्यय की बहुलता से प्रयुक्त लेट् लकार में और भी अधिक रूप होते हैं। यथा- भू धातु के लेट् लकार के केवल तिप् में- "भविषति, भाविषाति, भाविषद्, भाविषाद्, भाविषत्, भाविषात्, भविषति, भविषाति, भविषद् भविषाद् भविषत् भविषात् भवति, भवाति, भवद्, भवाद्, भवत्, भवात्"-ये १८ रूप केवल भवेत् के तुल्य अर्थात् लिङ् के अर्थ में प्रथम पुरुष एकवचन के हैं। द्विवचन में ६ रूप, बहुवचन में १२, द्विवचन में ६, बहुवचन में ६ रूप और उत्तम पुरुष के एक वचन में १२ तथा द्विवचन और बहुवचन में भी १२-१२ रूप बनते हैं। इस एक ही लकार में १६ रूप हैं।

अन्य लकारों के समान 'लेट्' में भी आत्मनेपद, भाववाच्य, कर्मवाच्य, कर्मकर्तृप्रक्रिया: सन्, यङ्, णिच् आदि प्रक्रियाओं में समान रूप से पद बन सकते हैं।

'भू' - धातु से इस प्रकार लेट् लकार सहित सभी ११ लकरों में हमारे हस्तलेख अमुद्रित 'धातुप्रकाशः' के अनुसार कुल तिङन्तरूप ६३३६ बनते हैं।

क्रिया पद के निष्पन्न रूप के साथ 'तरप्, तमप्, कल्पप्, देश्य, देशीयर, अकच्, रूपप्' - आदि कुछ तद्धित प्रत्यय विशिष्ट अर्थों में लगते हैं। तदनुसार 'भवतितराम्, भवतितमाम्, भवतिकल्पम्, भवतिदेश्यम्, भवतिदेशीयम्,भवतकि, भवतिरूपम्'= भवति रूप बनते हैं, जो ६३३६×७= ४४३५२ रूप बनते हैं, जो पूर्वरूपों के साथ मिलकर (४४३५२+६३३६)= ५०६८८ रूप हो जाते हैं।

उपसर्गों की विशेषता

उपसर्गों के योग से धात्वर्थ में कहीं वैशिष्ट्य आ जाता है, तो कहीं अर्थ बदलता है। जैसे:- 'प्रभवः, पराभवः सम्भवः, अनुभव, विभवः, आभव, अधिभवः, उद्भव, अभिभवः, प्रतिभवः, परिभवः' इत्यादि । इसी प्रकार आहारः, विहारः, संहारः, प्रहार, समाहारः, प्रत्याहारः, उदाहारः इत्यादि रूप होते हैं।

२० उपसर्गों के योग से पूर्वोक्तरूप (५०६८८×२०)= १०१३७६० बनते हैं, जो उपसर्गरहितों से मिलकर (१०१३७६०+५०६८८)= १०६४४४८ रूप हो जाते हैं। ये दस लाख चौंसठ हजार चार सौ अड़तालीस रूप केवल 'भू' धातु के हैं। पाणिनीय धातुपाठ में इस प्रकार के धातु २००० से अधिक हैं।

इनमें कुछ धातु अजादि (स्वरादि) हैं, जिनसे यङ् प्रत्यय न होने से यङन्त प्रक्रिया के रूप कम हो जाते हैं। इस प्रकार यदि औसतन प्रत्येक धातु से १० लाख रूप मानें तो सब धातुओं के रूप मिलकर (१००००००×२०००)= २,००,००,००,००० (दो अरब= दौ सौ करोड़) रूप हो जाते हैं।

उपर्युक्त संख्या पाणिनीय धातुपाठ की लगभग २००० धातुओं से निष्पन्न रूपों की है। काशकृत्स्न-धातुपाठ के लगभग ८०० (= आठ सौ) धातु ऐसे हैं, जो पाणिनीय धातुपाठ में नहीं हैं। कुछ सौत्र धातु अष्टाध्यायी में तथा कुछ जिनेन्द्र-व्याकरण आदि के धातुओं की संख्या दो सौ/ २००हो जाती है। इस प्रकार पाणिनीय धातुपाठ से अतिरिक्त १०००(= एक सहस्र) धातु हैं, जिनके पूर्वोक्त विधि से १,००,००,००,००० (= एक अरब = एक सौ करोड़) रूप और बनेंगे तथा कुल मिलाकर ३,००,००,००,००० (= तीन अरब) धातुरूप होंगे।

कृत् - प्रत्यय

'भू' - धातु से कृत्प्रत्ययों के योग से बने प्रातिपदिकों / शब्दों को भी संक्षेप से देखें:-

'चाहिए' या 'के लिए' अर्थ में 'तव्य' प्रत्यय लगता है। 'भू + तव्य = भवितव्य', (होना चाहिए, होने योग्य)। इसके तीनों लिङ्गों में सातों विभक्तियों में २१+२१+२१ = ६३ रूप होते हैं।

सन् आदि प्रत्ययान्त भू-धातु से 'तव्य' प्रत्यय का योग होने पर 'बुभूषितव्य, भावयितव्य, भावयिषितव्य, बोभूयितव्य'- आदि रूप बनेंगे।

प्रत्येक के तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में ६३-६३ रूप बनकर ६३×४= २५२ रूप तथा पूर्व के ६३ रूप मिलकर २५२+६३= ३१५ रूप होंगे।

तव्य से अतिरिक्त अन्य ४० से अधिक कृत् प्रत्यय भी 'भू' धातु से लगते हैं, जिनसे पूर्ववत् (३१५×४०=)१२६०० रूप बनते हैं। इनके समान पूर्वोक्त (२०००+१००० =)३००० धातुओं से (१२,५००×३०००=)३,७५,००,००० रूप न्यूनतम बनेंगे। इन सबके साथ २० उपसर्ग लगें तो (३,७५,००,०००×२०=) ७५,००,००,००० रूप और भी बन जायेंगे। पूर्वोक्त निरुपसर्गों के साथ मिलकर कुल कृदन्त रूप (७५,००,००,०००+ ३,७५,००,०००=) ७८,७५,००,००० (अठत्तर करोड़ पिचत्तर

लाख) बनते हैं।

कृदन्त प्रातिपदिकों से तद्धित प्रत्ययों के योग से अर्थ विशेष में भिन्न प्रातिपदिक बना लिए जाते हैं। जैसे- भूमि से सम्बन्धित अर्थ में 'भौम'। यह विशेषण होने से तीनों लिङ्गों में हो सकता है। इसी प्रकार 'प्रति भू' से 'प्रातिभाव्य' (जमानत) 'स्वयम्भू' से 'स्वायम्भुव', 'भूरि' से 'भौरिक', 'भवत्' 'भवदीय, भावत्क'। 'भूत' से 'भौतिक'। विभव से 'वैभव'। शम्भू से 'शाम्भव'। ये सभी विशेषण होने के कारण तीनों लिङ्गों से सम्बद्ध हैं। भू धातु के योग से यथेष्ट शब्द बन जाते हैं।

कुछ तद्धित प्रत्यय शब्दों को अव्यय भी बना देते हैं। जैसे- भव + तसिल् = भवतः (भव से); भव + त्रल् = भवत्र इत्यादि।

पारम्परिक समास से बने शब्दों की इयत्ता असम्भव है। अव्ययीभाव के पद एवं कुछ अन्य सामासिक पद अव्यय होते हैं।

जैसे : अधिभूतम् (भूत या भूतों में)। अधिभवम् (जन्म में, संसार में, शिव में) इत्यादि।

यहाँ भू धातु से निष्पन्न अत्यन्त प्रसिद्ध पदों की गणना कराई गयी है। अन्य अप्रसिद्ध प्रत्यय या अतिशास्त्रीय प्रयोग छोड़ दिए हैं। इसी प्रकार अन्य धातुओं से भी बहुत से रूप बनते हैं। उनकी पूर्ण इयत्ता नहीं बतायी जा सकती।

नामधातु

अब तक हमने पाणिनीय धातुपाठ के धातुओं तथा अन्य धातुपाठों के लगभग ३००० धातुओं से निष्पन्न विभिन्न रूपों के विस्तार का दिग्दर्शन कराया है। अब नाम धातुओं का विचार करते हैं।

नामधातु के रूप में प्रत्येक प्रातिपदिक एक धातु है तथा उससे फिर उसी प्रकार लाखों पदों का क्रम है-पुत्र से 'पुत्रीयति, पुत्रायते'। 'अश्व' से 'अश्वस्यति' अश्वायते। 'त्वद्' से 'त्वद्यति' इत्यादि १० लकारों एवं ४० प्रक्रियाओं में रूप करोड़ों, अरबों की संख्या में हो जाते हैं। तुल्य-आचरण अर्थ में क्विप् प्रत्यय होने पर जिसका कि पूर्णतया लोप भी हो जाता है, प्रत्येक प्रातिपदिक उसी रूप में नामधातु बन जाता है। जैसे :- देवदत्त इव आचरति (देवदत्त + क्विप्) देवदत्त, (देवदत्त + शप् + तिप्) = 'देवदत्तति'; 'देवदत्ततः'; 'देवदत्तन्ति' इत्यादि सभी पुरुषों सभी वचनों, सभी दस लकारों, सभी ४० प्रक्रियाओं में तिङन्त एवं कृदन्त रूप अरबों, खरबों की संख्या में विशिष्ट अर्थों में बनते चले जाते हैं।

नामधातुओं से बने शब्दों / पदों की गणना करना उसी प्रकार असम्भव है, जिस प्रकार अन्तरिक्ष के सभी तारों अथवा पृथिवी आदि ग्रहों पर स्थित सभी पदार्थों के परमाणुओं की गिनती / इयत्ता बताना। चिन्तन करते - करते पाणिनीय आदि व्याकरणों के आधार पर ब्रह्माण्ड में शब्दसमूह / शब्दब्रह्म वैसा ही व्यापक दीखता है, जैसे लोक-लोकान्तरों में सब ब्रह्माण्डों में ब्रह्म / परमेश्वर व्यापक है। शब्दों / पदों की एक-एक करके गणना करने के लिए यदि सब समुद्रों की स्याही बनाकर, सब वृक्षों की एक-एक टहनी को लेखनी बनाकर युगों-युगों तक लिखा जाय, तो भी उनकी गणना पूरी नहीं हो सकेगी।

जिस प्रकार विशिष्ट दूरबीनों की सहायता से वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के सितारे गिनने का कुछ प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार वैयाकरण लोग पाणिनीय आदि व्याकरणों की सहायता से आवश्यक/अपेक्षित शब्दों की अर्थ सहित व्यवस्थित जानकारी करते कराते हैं।

शब्दकोष

संस्कृत का शब्दकोष भी संसार की सभी भाषाओं से विशालतम है। इसमें पृथिवी के लिए २५ शब्द हैं, रात्रि के लिए २७, उषा के लिए २०, मेघ के लिए ३५, वाणी के लिए १२०, नदी के लिए ३७, अपत्य/पुत्र के लिए २५, मनुष्य के लिए ३० शब्द हैं। ये केवल उदाहरण मात्र हैं, परिगणन नहीं।

संसार की किसी भी भाषा में इतना विशाल शब्दसंग्रह नहीं है। हरीतकी (=हरड़) के ३५ नाम है। उनमें से कुछ ये हैं:- अभया, अव्यथा, पथ्या, श्रेयसी,शिवा, कायस्था, बल्या, पाचनी, जीवनिका, जीवनी, प्राणदा, अमृता- इत्यादि। इससे जान सकते हैं कि हरड़ से शरीर निरोग होता है, रोगभय दूर होता है, पाचनशक्ति बढ़ती है। स्त्री के - माता, जननी, महिला, योषा, पुरन्ध्री, पतिंवरा, वर्या, कुलवधू, कुलपालिका, जाया, दारा, वरारोहा, महिषी, ललना, कान्ता, पत्नी, सहधर्मिणी, भार्या, पाणिगृहीती- इत्यादि बहुत से नाम हैं, जिनसे स्त्रियों की विभिन्न स्थितियों का ज्ञान होता है।

अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं में यह विशेषता नहीं है। जैसे:- अंग्रेजी में मामा, चाचा, ताऊ, मौसा, फूफा के लिए एक ही शब्द है: अंकल। चाची, ताई, बुआ, मौसी, मामी के लिए-आण्टी शब्द है। दादा और नाना के लिए एक ही सामान्य शब्द है- 'ग्राण्डफादर', तथा दादी और नानी के लिए 'ग्राण्डमदर'। ऐसी स्थिति में अंकल कहने से पता

नहीं चलता कि इससे मामा, चाचा, आदि में से किसको बताया जा रहा है? एक बार बी.बी.सी. के समाचारों में मैंने सुना कि श्री राजीव गाँधी के दादा स्वतन्त्र भारत के पहले प्रधानमन्त्री बने। जब कि दादा के स्थान पर नाना कहना चाहिए था। इस त्रुटि का कारण था, दोनों के लिए प्रयुक्त 'ग्राण्डफादर' शब्द। अंग्रेजी में प्राप्त समाचार का अनुवाद 'नाना' के स्थान पर 'दादा' हो गया।

इतना विशाल शब्द भण्डार होते हुए भी उसका शब्दार्थ समझने में विशेष कठिनाई नहीं होती, क्योंकि संस्कृत के शब्दों के अर्थ उसके धात्वर्थ से उनके अन्दर ही विद्यमान होते हैं । उदारणार्थ:- 'सृष्टि, जगत् और संसार'- इन शब्दों से विश्व की यथार्थ सत्ता का बोध होता है। 'सृज्' धातु का अर्थ है- रचना, बनाना। इससे 'क्तिन्' -प्रत्यय लगाकर 'सृष्टि' शव्द बनता है। इससे पता चलता है कि यह विश्व बनाया हुआ है, रचा गया है। फिर 'गच्छति इति जगत्' से ज्ञान होता है कि विश्वचलता है, गतिशील है। 'सम्' उपसर्ग सहित 'सृ' का अर्थ है-गति करना, चलना, बहना आदि। इससे ज्ञात होता है कि यह विश्व गतिशील है, चलता है और संसरणशील (परिवर्तनशील) है। इस प्रकार संसार-विषयक बहुत सी बातें इन तीन शब्दों से ही ज्ञात हो जाती है। अंग्रेजी के World- इस शब्द से विश्व का स्थिति विषयक कोई बोध नहीं होता। इसी प्रकार महिला (पूजनीया, सम्माननीया), पिता (रक्षक, पालक), माता (सन्तान से सर्वाधिक स्नेह / प्रीति करने वाली), पात्र (रक्षक, भोज्यसाधन), वस्त्र (आच्छादित करने वाला), लेखनी (लिखने का साधन) आदि शब्दों से उनके कार्यों / उपयोगों का ज्ञान जिस सरलता से हो जाता है, वैसा इनके अंग्रेजी शब्दों क्रमश: 'लेडी, फादर, मदर, पॉट, क्लॉथ, पैन' से नहीं होता।

संस्कृत - व्याकरण की यौगिक - अर्थबोधकता के कारण ही हम वेदों तथा हजारों वर्ष पूर्व लिख गये शाखा-उपवेद- ब्राह्मण- आरण्यक- उपनिषद्- वेदाङ्ग-साहित्य- आयुर्वेद- विज्ञान- गणित- रामायण- महाभारत-गीता आदि ऋषि-मुनियों के बनाये हुए सभी ग्रन्थों को सुगमता से समझ सकते हैं, जबकि हमारी प्रान्तीय भाषाओं में लिखे २-३सौ वर्ष पुराने ग्रन्थ भी आज हमारे लिए दुरूह हो जाते हैं।

'आङ्ग्ल-भाषा (अंग्रेजी) का इतिहास' नामक ग्रन्थ में आङ्ग्ल - भाषा, यूरोपीय भाषाओं में समृद्ध भाषा के रूप में बतायी गयी है। उसमें कम्पेण्डियस- ऑक्सफोर्ड-डिक्सनरी के आधार पर जर्मन भाषा में १,८५,०००; फ्रेंच भाषा में १,००,००० और आङ्ग्ल- भाषा में ५,००,०००+५,००,००० (सांकेतिक, वैज्ञानिक)= १०,००,००० शब्द बताये गये हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में अंग्रेजी शब्दों की संख्या ६,५०,००० बतायी गयी है।

इससे आप संस्कृत - भाषा के महत्त्व एवं उसके भाव प्रकट करने के सामर्थ्य का अनुमान कर सकते हैं।

१८वीं शताब्दी में जब इस संस्कृत भाषा का प्रवेश योरोप में हुआ, तो पाश्चात्य विद्वानों में नये उत्साह और हर्ष की लहर- सी दौड़ गयी तथा तुलनात्मक भाषा-विज्ञान एवं तुलनात्मक वेद-विज्ञान जैसे नये शास्त्रों की रचना होने लगी। मैक्समूलर, मैक्डोनेल्ड, गोल्डुस्टुकर, विल्सन, कीथ, विंटरनिट्ज, रॉथ, ग्रासमान जैसे सैकड़ों विद्वानों ने अपने जीवन को उसके अभ्यास और अनुसन्धान में लगा दिया। योरोप और अमेरिका के हर विश्वविद्यालय में तथा जापान, रूस आदि के विश्वविद्यालयों में संस्कृत - भाषा के अध्ययन और अनुसन्धान के लिए पीठों का निर्माण हुआ। वैदिक शोध और भाषा - विज्ञान विषयक महान् ग्रन्थों की रचना हुई । देववाणी संस्कृत में आकाशवाणी से वार्ता-प्रसारण भी सर्वप्रथम जर्मनी के कोलोन केन्द्र से प्रारम्भ हुआ, उसके वर्षों बाद हमने भारत में प्रारम्भ किया।

अमेरीका के 'नासा' नामक सैन्य अनुसन्धान केन्द्र और संगणक (कम्प्यूटर) के कुछ विशेषज्ञों ने संगणक पर मानवीय भाषा के जो प्रयोग किये हैं, उसमें संस्कृत सबसे उपयुक्त पायी गयी है। इन वैज्ञानिकों ने अपने २५ वर्ष के अनुसन्धान के पश्चात् दावा किया है कि संगणक की यान्त्रिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी भी अन्य भाषा की तुलना में संस्कृत की संरचना ही सबसे उपयुक्त है। 'नासा' के वैज्ञानिकों की यह उपलब्धि भारत के लिए बड़े गौरव और महत्त्व की बात है, परन्तु बड़े खेद का विषय है कि आज उस सुरभारती की जन्मस्थली भारतवर्ष में ही उसका ह्रास बड़ी तेजी से हो रहा है। तथाकथित त्रिभाषा -सूत्र के नाम पर आज उसको पाठ्यक्रम से निकाला जा रहा है। देश की सबसे बड़ी और अमूल्य धरोहर से ही देश की युवा पीढ़ी को वंचित कर दिया गया है ।

अन्त में हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह इस देश के कर्णधारों एवं जनता के हृदय में अपूर्व अनुराग एवं भक्तिभावना भरे, जिससे भारत पुन: विश्वगुरु का पद प्राप्त कर सके।।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

आर्य समाज का वेद प्रचारः एक नूतन प्रयोग

- रामनिवास गुणग्राहक

आर्य समाज की प्रचार पद्धति के सम्बन्ध में विचार करने से पहले एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि संसार के धार्मिक कहे जाने वाले मत-पन्थों के प्रचार-अभियान और आर्य समाज के प्रचार कार्य में बहुत बड़ा अन्तर है। पाखण्ड और अन्धविश्वास को धर्म स्वीकार कर चुका भारतीय जन मानस एक पाखण्ड से अच्छे और सरल लगने वाले दूसरे पाखण्ड को सहजता से स्वीकार कर लेता है। मूर्ति राम की न सही, कृष्ण की भी चलेगी, गणेश की न सही, हनुमान की भी चलेगी। यही परम्परा आज यहाँ तक पहुँच गई है कि शिव का स्थान साँई ले सकता है और गली-गली में बनने वाले भोले-भैरों के मन्दिर से जिनकी कामना सिद्ध नहीं होती, वे उसी कथित श्रद्धा-भक्ति से किसी मियाँ की मजार या कब्र पर जाकर भेंट पूजा चढ़ाने चले जाते हैं। आर्य समाज इन सबसे अलग हटकर बुद्धि और तर्क की बात करता है, जिन्हें हमारे पुराणी और कुरानी बन्धु सैकड़ों सहस्रों वर्ष पूर्व धार्मिक सोच से दूर भगा चुके हैं। यही कारण है कि तर्क और बुद्धि से काम लेने वालों को आज के धर्माचार्य व धर्मभीरु लोग बिना सोचे-समझे नास्तिक कह डालते हैं। वैसे यह एक कड़वा सच भी है कि तर्क और विज्ञान की बात करने वाले हमारे बुद्धिजीवी आज नास्तिक बन कर ही रह गये हैं। ऐसे में आर्य समाज को अपनी प्रचार-पद्धति की जाँच-परख करते रहना चाहिए।

यह सही है कि आर्य समाज की पहली पीढ़ी ने जितना, जो कुछ वेद प्रचार व समाज सुधार का काम किया, वह सब इसी प्रचार-पद्धति से किया है। ऐसे में प्रत्येक वेद भक्त और ऋषि भक्त आर्य का कर्त्तव्य है कि वह आर्य समाज के प्रचार कार्य को प्रखर और प्रभावी बनाने की दिशा में गम्भीरता से विचार करे और उसे व्यावहारिक बनाने के लिए कुछ ठोस कार्य भी करे।

आर्य समाज को नवजीवन देने के लिए हमें अपनी प्रचार-पद्धति में क्या कुछ बदलना पड़ेगा। यद्यपि आज आर्य समाज में ऐसे उपदेशक बहुत कम संख्या में हैं जो नित्य नियमित रूप से संध्योपासना व स्वाध्याय करते हों। जितने भी हों, प्रारम्भ के लिए ऐसे विद्वान् हमारे मध्य हैं जो संध्या व स्वाध्याय दैनिक कर्म के रूप में करते हैं। जो नहीं भी करते हैं, जब सिर पर आ पड़ेगी तो सब करने लग जाएँगे। आज समस्या यह है कि आर्य समाज में 'सब धान सत्ताईस का सेर' बिकता है। हमें सिद्धान्तनिष्ठ, धर्मात्मा, निष्कलंक, निर्लोभी और सरल स्वभाव के स्वाध्यायशील किसी एक विद्वान को अपने आर्य समाज में प्रचार कार्य के लिए कम से कम ८-१० दिन के लिए सादर आमन्त्रित करना चाहिए। उससे पहले आर्य समाज के पदाधिकारी व श्रेष्ठ सभासद मिलकर प्रचार योजना इस ढंग से बनायें - प्रतिदिन प्रातःकाल सुविधानुसार किसी पदाधिकारी या श्रद्धालु आर्य के घर यज्ञ व पारिवारिक सत्संग रखें, जिसमें एक घण्टे तक व्याख्यायुक्त यज्ञ हो और एक घण्टा धर्म, ईश्वर, वेद आदि की विशेषताएँ लिये हुए परिवार समाज व राष्ट्र से जुड़े हुए कर्त्तव्यों के पालन की प्रेरणा परक प्रवचन होना चाहिए। जिसके परिवार में यज्ञ व सत्संग हो,वह अपने परिचितों व पड़ौसियों को प्रेमपूर्वक आमन्त्रित करे। घर मीठे चावल बनाये, स्विष्टकृत् आहुति व बलिवैश्वदेव की आहुतियाँ देकर प्रसाद रूप में सबको वही यज्ञ शेष प्रदान करे।

प्रातःकाल इतना करके दिन में किसी विद्यालय में कार्यक्रम रखने के लिए पहले से सम्बन्धित प्रधानाध्यापक आदि से मिलकर सुविधानुसार ४०-५० मिनट का समय तय कर लें। आर्य समाज के एक या दो सज्जन आमन्त्रित विद्वान् को सम्मानपूर्वक विद्यालय ले जाएँ और विद्या व विद्यार्थियों से जुड़े हुए विषय पर सरल व रोचक भाषा शैली में वेद व वैदिक साहित्य के प्रमाणपूर्वक प्रवचन करें। वेद व आर्य समाज के प्रति श्रद्धा बढ़ाने की भावना का ध्यान पारिवारिक यज्ञ-सत्संग में भी रखना चाहिए और विद्यालयों में भी। कार्यक्रम के अन्त में सबको निवेदन करें कि वे सायंकाल आर्य समाज में होनेवाली धर्मचर्चा सत्संग में पुण्य लाभ प्राप्त करने हेतु अवश्य पधारें।

सुविधानुसार एक दिन में दो-तीन विद्यालयों में प्रवचन रख सकते हैं। हमारी आज की पीढ़ी बहुत तेज तर्रार है, उसके मन-मस्तिष्क में धर्म और ईश्वर को लेकर अनेक प्रश्न खड़े होते हैं। लेखक लड़के-लड़कियों के कॉलेजों के अनुभव के आधार पर कह सकता है कि युवक- युवतियाँ बड़े तीखे प्रश्न करते हैं। ऐसे में आर्य समाज के गौरव को ये स्वाध्यायशील व साधनाशील आर्य विद्वान् ही बचा सकते हैं। नई पीढ़ी को प्रश्नों व शंका समाधान की छूट दिये बिना हम नई पीढ़ी के मन मस्तिष्क को धर्म, ईश्वर व आर्य समाज की ओर नहीं मोड़ सकते, इसलिए किसी विद्वान् को बुलाने से पहले इस बात का ध्यान अवश्य रखें और उन्हें इसकी सूचना भी अवश्य कर दें।

दिन में इतना कुछ करके रात्रि में सबकी सुविधा व अधिकतम लोगों के आगमन की सम्भावना को ध्यान में रखते दो घण्टे का कार्यक्रम बनायें। दिन में अगर अधिक प्रश्न व शंकाएँ रखी गई हों तो उनके उत्तर रात्रिकाल के सत्संग में रखे जा सकते हैं या समाज के सुधी जन कार्यक्रम बनाते समय कुछ उपयोगी व सामयिक विषय निश्चित कर सकते हैं। इस प्रकार एक दिन का यह कार्यक्रम है। ऐसे ही ८-१० दिन का कार्यक्रम बनाकर हम इसके अनुसार प्रचार-कार्य करके अपने समय, श्रम व संसाधनों का सटीक सदुपयोग करके बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं। प्रसंगवश एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथ्य की ओर आर्य जनों का ध्यान आकर्षित करना बहुत आवश्यक है। प्रचार कार्य में प्रवचन और सत्संग से अधिक भूमिका साहित्य की होती है। प्रचार को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है कि हम ऋषि दयानन्द के लघु ग्रन्थों, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, पं. चमूपति, स्वामी दर्शनानन्दजी, स्वामी वेदानन्द जी जैसे सिद्धान्तनिष्ठ विद्वानों के साहित्य को बहुत बड़ी मात्रा प्रकाशित करा कर अल्प मूल्य में उपलब्ध करायें। आर्य समाज को इस दिशा में भी गम्भीरता से सोचना पड़ेगा। पहली-दूसरी पीढ़ी के गम्भीर, सिद्धान्त जीवी वैदिक विद्वानों के साहित्य का उद्धार करना आज की बहुत बड़ी माँग है, ऐसा न हो कि कल बहुत देर हो जाए। वेद प्रचार को जीवन्त बनाने के लिए सत्साहित्य सिद्धान्तनिष्ठ प्रवचन-सत्संग ही एक मात्र उपाय है। हमारे सुधी पाठक इस पर गम्भीरता से विचार करके देखेंगे तो लगेगा कि बिना लम्बी-चौड़ी भागदौड़ के, बिना किसी ताम-झाम के, बिना किसी बड़े खर्चे के - एक सीमित आय वाले आर्य समाज भी इसका लाभ ले सकते हैं।

कुछ लोग यह कहते हैं कि आर्य समाज का सांगठनिक ढाँचा आज के समय के अनुकूल नहीं है। ऐसे लोग लोकतान्त्रिक पद्धति की न्यूनताएँ गिनाने लगते हैं, लेकिन वे महर्षि दयानन्द की वेद विद्या से प्राप्त दूरदृष्टि को समझ नहीं पाते। नियम-सिद्धान्त कितने ही उच्चस्तर के हों, अगर व्यक्ति निम्न स्तर के हैं तो अति महत्त्वपूर्ण तथ्यों की अनदेखी करके, साधारण या मनोनुकूल तथ्यों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करके वे अच्छे-अच्छे नियम-सिद्धान्तों का दुरुपयोग कर डालते हैं। आर्य समाज के संगठन सम्बन्धी नियम-उपनियमों के साथ भी हमारे कर्णधार लम्बे समय से यही करते चले आ रहे हैं।

- स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान

मो. ०७५९७८९४९९१

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानु:	२०.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेद: समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
स्वामी विष्वङ् परिव्राजक	
१३६. ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७. योग	५०.००
१३८. अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९. समाधि	१००.००
स्वामी अभयानन्द सरस्वती	
१४०. प्राणायाम चिकित्सा	
डॉ. सत्यदेव आर्य	
१४१. वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२. ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३. तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००
विरजानन्द दैवकरणि	
१४४. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५. महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००
वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	
१४६. बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७. वैदिक सूक्ति-सुमन	२५.००
वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ	
१४८. दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९. आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०. मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३. ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४. ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५. वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६. सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७. दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८. वृक्षों में जीवात्मा	१०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१५९. महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०. महर्षि महिमा	२.००
१६१. स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२. ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३. निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४. मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५. नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६. परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७. महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८. संगठन सूक्त	२.००
१६९. ३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०. प्यारा ऋषि	२५.००
१७१. नककटा चोर	३०.००
१७२. महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३. स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४. भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५. महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६. आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७. शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८. नैति मंजूषा	९५०.००
१७९. ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०. त्याग की धरोहर	१००.००
ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)	
(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)	
१८१. अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	४०.००
१८२. अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	४०.००
१८३. आसन (सी.डी.)	४०.००
१८४. सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	४०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

गृहस्थाश्रम की सफलता के उपाय

प्रो. रामसिंह एम.ए.

वैदिक आश्रम मर्यादा में गृहस्थाश्रम दूसरा आश्रम है। इसे यदि चारों आश्रमों का आधार कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। इस आश्रम की सफलता के लिए आवश्यक है कि आश्रम में प्रवेश के इच्छुक यथावत् ब्रह्मचर्य में आचार्यानुकूल वर्त कर, धर्म से चारों वेद या तीन या फिर दो अथवा एक वेद को सांगोपांग पढ़कर अखण्डित-ब्रह्मचर्य से युक्त पुरुष वा स्त्री गुरु की यथावत् आज्ञा लेकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दर-लक्षणायुक्त कन्या से विवाह करें।

उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का आपस में विवाह होना चाहिए। जो कुल सत्क्रिया से हीन और सत्पुरुषों से रहित हों तथा जिनमें बवासीर, क्षय, दमा, मिरगी, श्वेतकुष्ठ और गलित कुष्ठादि भयानक रोग हों, उनकी कन्या या वर के साथ विवाह होना अनुचित है, क्योंकि इस प्रकार के विवाहों से ये सब दुर्गुण और रोग अन्य कुलों में भी प्रविष्ट हो जाते हैं।

कन्या पिता के गोत्र की नहीं होनी चाहिए तथा माता के कुल की छः पीढ़ियों में भी न हो। साथ ही कन्या का विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है, निकट रहने में नहीं। दूरस्थों के विवाह में अनेक लाभ हैं तथा निकट विवाह होने में अनेक हानियों की सम्भावना रहती है।

जब स्त्री-पुरुष विवाह करना चाहें, तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का परिमाण आदि यथायोग्य होना चाहिये। जब तक उपर्युक्त गुणों में मेल नहीं होता, तब तक गृहस्थाश्रम में कुछ भी सुख नहीं मिलता।

बाल्यावस्था में तो विवाह करने से सुख होता ही नहीं। जिस देश में ब्रह्मचर्य-विद्या-ग्रहण रहित बाल्यावस्था हो और जहाँ अयोग्यों का विवाह होता है, वह देश दुःख में डूब जाता है तथा जिस-जिस देश में विवाह की श्रेष्ठ विधि और ब्रह्मचर्य-विद्याभ्यास अधिक होता है, वह देश सुखी और समृद्ध होता है। सोलहवें वर्ष से लेकर चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्ष से लेकर अड़तालीसवें वर्ष तक पुरुष का विवाह-समय उत्तम है। इसमें जो सोलह और पच्चीस वर्ष में विवाह करें तो निकृष्ट, अठारह वर्ष की स्त्री, तीस, पैंतीस व चालीस वर्ष के पुरुष का विवाह मध्यम तथा चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह होना उत्तम है।

ब्रह्मचर्य विद्या के ग्रहणपूर्वक, विवाह के सुधार ही से, सब बातों का सुधार और बिगाड़ने से बिगाड़ हो जाता है।

चाहे लड़का-लड़की मरण पर्यन्त कुँवारे रहें, परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए।

परस्पर-सहमति

विवाह लड़के-लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिये, क्योंकि एक दूसरे की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध बहुत कम और सन्तान उत्तम होती है। अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है, माता-पिता का नहीं, क्योंकि जो उनमें परस्पर प्रसन्नता रहे तो उन्हीं को सुख और विरोध में उन्हीं को दुःख होता है, इसलिये जैसी स्वयंवर की रीति आर्यावर्त्त में परम्परा से चली आती थी, वही उत्तम है।

जब तक सब ऋषि-मुनि, राजा-महाराजा और अन्य आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ कर ही स्वयंवर विवाह करते थे, तब तक इस देश की सदा उन्नति होती रही। जब से यह ब्रह्मचर्य से रहित विद्या की पढ़ाई और बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता-पिता के आधीन विवाह होने लगे, तब से क्रमशः आर्यावर्त्त देश की हानि होती चली आयी। इससे इस दुष्ट काम को छोड़ कर सज्जन लोग पूर्वोक्त प्रकार से स्वयंवर विवाह किया करें। विवाह वर्णानुक्रम से करें।

कई लोग आपत्ति करते हैं कि विवाह-बंधन में केवल दुःख भोगना पड़ता है, इसलिए यह क्यों न हो कि जिसके साथ जिसकी प्रीति हो, तब तक मिले रहें, प्रीति छूट जाने पर एक-दूसरे को छोड़ देवें। परन्तु इस प्रकार करने को

हम पशु-पक्षी का व्यवहार मानते हैं, मनुष्यों का नहीं। जो मनुष्यों में विवाह का नियम न रहे, तो गृहस्थाश्रम के अच्छे-अच्छे व्यवहार नष्ट-भ्रष्ट हो जायें। कोई किसी की सेवा भी न करे और महा व्यभिचार बढ़ कर सब रोगी, निर्बल और अल्पायु हो शीघ्र ही मर जायें। भय-लज्जा भी न रहे। वृद्धावस्था में कोई सेवा न करे। कोई किसी के पदार्थों का स्वामी या दायभागी भी न हो सके और न ही किसी का किसी पदार्थ पर दीर्घकाल पर्यन्त रहे। इन दोषों के निवारणार्थ विवाह ही होना सर्वथा योग्य है।

यह भी स्मरण रहे कि एक समय में एक ही विवाह उचित है, परन्तु समयान्तर में अनेक विवाह भी हो सकते हैं। जिस स्त्री या पुरुष का मात्र पाणिग्रहण संस्कार हुआ हो और संयोग न हुआ हो-अर्थात् अक्षतयोनि स्त्री और अक्षतवीर्य पुरुष हो, उनका ऐसी ही अन्य स्त्री वा पुरुष के साथ पुनर्विवाह होना चाहिए।

विवाह-प्रयोजन

स्त्री और पुरुष की सृष्टि का यही प्रयोजन है कि वे धर्म से अर्थात् वेदोक्त रीति से सन्तानोत्पत्ति करें। ईश्वर के सृष्टि क्रमानुकूल स्त्री-पुरुष का स्वाभाविक व्यवहार रुक ही नहीं सकता, सिवाय वैराग्यवान् पूर्ण विद्वान् योगियों के। संसार में व्यभिचार और कुकर्म को रोकने का श्रेष्ठ उपाय ही है कि जो जितेन्द्रिय रह सकेंगे, वे विवाह न करें तो भी ठीक, परन्तु जो ऐसे नहीं हैं, उनका वेदोक्त रीति से विवाह अवश्य होना चाहिये। आपात्काल में नियोग भी आवश्यक है। इसी प्रकार से व्यभिचार न्यून तथा प्रेम से उत्तम सन्तान और स्वस्थ मनुष्यों की वृद्धि सम्भव है।

विवाह के प्रकार

विवाह आठ प्रकार के होते हैं- एक ब्राह्म, दूसरा दैव, तीसरा आर्ष, चौथा प्राजापत्य, पाँचवाँ आसुर, छठा गान्धर्व, सातवाँ राक्षस एवं आठवाँ पैशाच।

इन विवाहों की यह व्यवस्था है कि वर कन्या दोनों यथावत् ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्वान्, धार्मिक और सुशील हों, उनका परस्पर प्रसन्नता से विवाह होना 'ब्राह्म' कहलाता है। विस्तृत यज्ञ करने में ऋत्विक् कर्म करते हुए जामाता को अलंकार युक्त कन्या का देना ''दैव'', वर से कुछ लेकर विवाह होना ''आर्ष'', दोनों का विवाह धर्म की वृद्धि के अर्थ होना ''प्राजापत्य'', वर और कन्या को कुछ दे के विवाह होना ''आसुर'', अनियम- असमय किसी कारण से वर कन्या का इच्छापूर्वक परस्पर संयोग होना ''गान्धर्व'', लड़ाई करके बलात्कार अर्थात् छीन-झपट वा कपट से कन्या का ग्रहण करना ''राक्षस'', शयन व मद्यादि पी हुई पागल कन्या से बलात्कार संभोग करना ''पैशाच'' विवाह कहलाता है। इन सब विवाहों में ब्राह्म विवाह सर्वोत्कृष्ट, दैव और प्राजापत्य मध्यम, आर्ष आसुर और गान्धर्व निकृष्ट, राक्षस अधम और पैशाच महाभ्रष्ट है, इसलिए यही निश्चय रखना चाहिए कि कन्या और वर का विवाह के पूर्व एकान्त में मेल न हो, क्योंकि युवावस्था में स्त्री-पुरुष का एकान्तवास दूषणकारक है।

विवाह से पूर्व

जब कन्या या वर के विवाह का समय हो तो उनके अध्यापक अथवा माता-पिता उनके गुण, कर्म और स्वभाव की भली-भाँति परीक्षा कर लें। जब दोनों का निश्चय विवाह करने का हो जाय, तो यदि अध्यापकों के समक्ष विवाह करना चाहें तो वहाँ, नहीं तो कन्या के माता-पिता के घर में विवाह होना योग्य है। कन्या और वर के खान-पान का उत्तम प्रबन्ध वैवाहिक-विधि से पूर्व होना चाहिये, जिससे उनका ब्रह्मचर्यव्रत और विद्याध्ययनरूप तपश्चर्या से दुर्बल शरीर चन्द्रमा की कला के समान बढ़कर थोड़े ही दिनों में पुष्ट हो जाये।

पश्चात् उपयुक्त समय वेदी और मण्डप रचकर अनेक सुगन्धादि द्रव्य और घृतादि का होम करके वैदिक-विधि के अनुसार विद्वान् पुरुष और स्त्रियों के सामने पाणिग्रहणपूर्वक विवाह-विधि पूरी करें।

विवाह के पश्चात्

स्त्री और पुरुष अपने-अपने कर्त्तव्य को पूरी तरह समझें और जहाँ तक बन पड़े, वहाँ तक ब्रह्मचर्य के वीर्य को व्यर्थ न जाने दें, क्योंकि उस वीर्य वा रज से जो शरीर उत्पन्न होता है, वह अपूर्व उत्तम सन्तान होती है।

पुरुष वीर्य की स्थिति और स्त्री गर्भ की रक्षा और भोजन-छादन इस प्रकार करे, जिससे गर्भस्थ बालक का शरीर अत्युत्तम रूप, लावण्य, पुष्टि, बल, पराक्रमयुक्त होकर दसवें महीने में जन्म होवे। विशेष उसकी रक्षा चौथे

महीने से और अतिविशेष आठवें महीने से करना योग्य है। कभी गर्भवती स्त्री रेचक, रुक्ष, मादक द्रव्य, बुद्धि और बलनाशक पदार्थों का सेवन न करे, किन्तु घी, दूध, उत्तम चावल, गेहूँ, मूँग,उर्द आदि खान-पान देश-कालादि के अनुसार करे। चौथे महीने में पुंसवन संस्कार और आठवें में सीमन्तोन्नयन विधि के अनुकूल करे।

सन्तान-पालन

बालक के जन्म के समय बालक और उसकी माता की सावधानी से रक्षा करनी चाहिये। शुण्ठीपाक और सौभाग्यशुण्ठीपाक प्रथम से ही तैयार रहना चाहिए। बालक और उसकी माता को सुगन्धियुक्त उष्ण जल से स्नान कराना भी उचित है। नाड़ी-छेदन यथा-विधि कराये। प्रसूति-गृह में सुगन्धादि युक्त घृत का होम करे। तत्पश्चात् बालक के कान में 'वेदोऽसि' - तेरा नाम वेद है सुनाकर, पिता मधु और घृत से बालक की जीभ पर 'ओ३म्' लिखे और शलाका से उसे चटा दे।

पश्चात् बालक और उसकी माता को दूसरे शुद्ध स्थान पर बदल दें और वहाँ नित्य सायं-प्रातः सुगन्धित घी का हवन करें। बालक छह दिन तक माता का दूध पिये। छठे दिन स्त्री बाहर निकले। सन्तान के दूधादि के लिए यथावत् प्रबन्ध करें। समर्थ हो तो कोई धाय रख ली जाये। बालक के पालन-पोषण में कोई अनुचित व्यवहार न हो।

पश्चात् नामकरणादि संस्कार ''संस्कार-विधि'' की रीति से यथाकाल करता जाये।

पुरुष के कर्त्तव्य

इस प्रकार स्त्री और पुरुष विधिपूर्वक गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए संसार में सुखपूर्वक रहें। पुरुष का कर्त्तव्य है कि सभी प्रकार से स्त्री को प्रसन्न रखे। जिस कुल में भार्या से भर्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है, उसी कुल में सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है, उसमें पुरुष विद्यायुक्त होकर देव संज्ञा को प्राप्त होते हैं और आनन्द करते हैं। जहाँ स्त्रियों का सत्कार नहीं होता, वहाँ सारी क्रियायें निष्फल हो जाती हैं।

स्त्री के कर्त्तव्य

स्त्री को भी योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराई युक्त सब पदार्थों के उत्तम संस्कार तथा घर की शुद्धि रखे और व्यय करने में भी संकोच से काम ले, अधिक उदारता न दिखाये, अर्थात् यथायोग्य खर्च करे। पाकादि भी इस भाँति बनावे कि औषधरूप होकर शरीर और आत्मा में रोग न आने दे। आय-व्यय का ध्यान भी यथावत् रखे। घर के नौकर-चाकरों से यथायोग्य काम ले और घर के कार्यों में पूरी सावधानी बरते।

गृहस्थ के कर्त्तव्य

इस भाँति गृहस्थाश्रम में स्त्री-पुरुष परस्पर प्रेमपूर्वक रहें। बुद्धि-धनादि की वृद्धि करने वाले शास्त्रों को नित्य सुनें और सुनावें।

यथाविधि दिन और रात्रि की सन्धि में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए।

पितृयज्ञ भी गृहस्थ का कर्त्तव्य कर्म है। श्रद्धा और भक्ति भाव से विद्यमान माता-पिता आदि पितरों की सेवा करना ही पितृयज्ञ और श्राद्धतर्पण है। परम विद्वानों, आचार्यादि की सर्वप्रकार से सेवा करना ही ऋषि तर्पण है।

वास्तव में माता-पिता, स्त्री, भगिनी, सम्बन्धी आदि तथा कुल के अन्य कोई भद्र पुरुष वा वृद्ध हों, उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यानादि देखकर अच्छी प्रकार तृप्त करना, जिससे उनकी आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे-यही श्राद्ध और तर्पण है।

चौथा 'वैश्वदेव' यज्ञ है। जब भोजन सिद्ध हो जाये, तब उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षार युक्त को छोड़कर घृत-मिष्ट युक्त अन्न लेकर मन्त्रों से आहुति दे दें तथा कुछ भाग पत्ते या थाली में भी मन्त्रों से आहुति देते समय रखता जाय। यदि कोई अतिथि हो तो उसको दे दें, नहीं तो अग्नि में ही छोड़ देवें। इसी प्रकार किसी दुःखी प्राणी अथवा कुत्ते, कव्वे आदि के लिये भी छः भाग अलग रख दें- पश्चात् उनको दे दिये जायें।

अतिथि यज्ञ भी आवश्यक है। यदि अकस्मात् कोई धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान्, परमयोगी, संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आ जायें तो उसका यथाविधि सत्कार करना, खान-पानादि से सेवा-शुश्रूषा करना परम कर्त्तव्य है। समयानुसार गृहस्थ और राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं, परन्तु पाखण्डी

वेदनिन्दक, वेदविरुद्ध आचरण करने वालों का वाणी मात्र से भी सत्कार न करें-क्योंकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाते हैं- संसार को अधर्मयुक्त करते हैं और अपने सेवकों को भी अविद्या रूपी महासागर में डुबो देते हैं।

इन पाँचों महायज्ञों का अत्युत्तम फल होता है। धर्म की वृद्धि होकर संसार में सुख का संचार होता है।

गृहस्थ को अपनी दिनचर्या का भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। रात्रि के चौथे प्रहर अथवा चार घड़ी रात से उठे। आवश्यक कार्य से निवृत्त हो, धर्म और अर्थ, शरीर के रोगों का निदान और परमात्मा का ध्यान करे। अधर्म का आचरण कभी न करे।

अधर्मात्मा मनुष्य मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड और विश्वासघातादि कर्मों से पराये धन और पदार्थों को लेकर बढता है, धनादि ऐश्वर्य, यान, स्थान, मान-आदि प्रतिष्ठा को भी प्राप्त कर लेता है, परन्तु शीघ्र ही नष्ट हो जाता है, जैसे जड़ से कटा हुआ वृक्ष। इसलिये गृहस्थों को उचित है कि पक्षपात रहित होकर सत्य का सदैव ग्रहण करें, असत्य का परित्याग करें। न्याय रूप वेदोक्त धार्मिक मार्ग ग्रहण करें तथा अन्यों को भी इसी प्रकार की शिक्षा दिया करें।

धर्म से धन को कमायें और ऐसे धन को सद् पात्र में ही व्यय करें, अपात्र में धन का दुरुपयोग न करें। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण आदि तपरहित हैं, अशिक्षित हैं और दूसरों के धन पर ही अपना दाँत लगाये रखते हैं, उसी पर पलते हैं, ये तीनों प्रकार के अपात्र ही हैं। वे स्वयं भी डूबते हैं और अपने दाताओं को भी साथ डुबा लेते हैं।

इस प्रकार गृहस्थ इस लोक और परलोक का सदा ध्यान रखें। धर्म का सञ्चय धीरे-धीरे करता जाये, क्योंकि धर्म ही के सहारे से दुस्तर दु:ख सागर को जीव तर सकता है।

गृहस्थ जीवन में- विवाह होने के पश्चात् स्त्री के साथ पुरुष और पुरुष के साथ स्त्री बिक चुके होते हैं। जो उनके पारस्परिक हाव-भाव, नख-शिखाग्र-पर्यन्त जो कुछ भी हैं- वह एक दूसरे के आधीन हो जाते हैं, अत: स्त्री वा पुरुष एक दूसरे की प्रसन्नता बिना कोई व्यवहार न करें। इनमें बड़े अप्रियकारक काम व्यभिचार, वेश्या-परपुरुषगमनादि हैं। इनको छोड़के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पति सदा प्रसन्न रहें।

वर्णाश्रम-व्यवस्था

जिस प्रकार गृहस्थ अपने विवाह वर्णानुक्रम से करते हैं, वैसे ही वर्ण-व्यवस्था भी गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार होनी चाहिये। जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला है, वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और ऐसा ही आगे भी होगा।

जो नीच भी उत्तम वर्ण-कर्म-स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और जो उत्तम वर्णस्थ हो के नीचे काम करे, तो उसको नीच वर्ण में अवश्य गिनना चाहिये।

यजुर्वेद के इकत्तीसवें अध्याय के ग्यारहवें मन्त्र- ''**ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्**'' का अर्थ भी यही है कि जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सब में मुख्य-उत्तम हो, वह ब्राह्मण; बाहुबल-वीर्य जिसमें अधिक हो, वह क्षत्रिय; कटि के अधोभाग और जानु के उपरिस्थ भाग का ऊरु नाम है, जो सब पदार्थों और सब देशों में ऊरु के बल से जावे-आवे, प्रवेश करे, वह वैश्य और जो पग के अर्थात् नीचे अङ्ग के सदृश मूर्खत्वादि गुण वाला हो वह शूद्र है। यही बात मनु ने भी कही है कि शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण कर्म स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो जाये और वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण कर्म और स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाये। इसी प्रकार क्षत्रिय या वैश्य कुलोत्पन्न भी ब्राह्मण या शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है। चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरुष वा स्त्री हो, वह-वह उसी वर्ण में गिनी जावे। इस विषय में अनेक प्रमाण हैं।

वर्ण-धर्म

चारों वर्णों के कर्त्तव्य, कर्म और गुण भी पृथक्-पृथक् हैं।

पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना और लेना- ये छ: कर्म ब्राह्मण के हैं। वास्तव में ''प्रतिग्रह'' लेना नीच कर्म है।'शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिक्य'- छ: पहिले और नौ पिछले मिलाकर-

यह पन्द्रह कर्म और गुण ब्राह्मण वर्णस्थ मनुष्यों में अवश्य होने चाहियें।

इसी प्रकार ग्यारह क्षत्रिय वर्ण के कर्म और गुण हैं- अर्थात् प्रजा-रक्षण, दान, इज्या- अग्निहोत्रादि यज्ञ करना-कराना, अध्ययन, विषयों में न फँसना, शौर्य, धृति (धैर्य), दाक्ष्य- राजा प्रजा सम्बन्धी व्यवहार और शास्त्रों में चतुराई, युद्ध से न डरना, न भागना, दान, ईश्वरभाव-पक्षपातरहित होकर सबके साथ यथायोग्य वर्तना, प्रतिज्ञा पूरी करना-ये क्षत्रियों के धर्म हैं।

वैश्यों के गुण-कर्म भी इसी प्रकार गिनाये गये हैं- अर्थात् पशु-रक्षा, दान, इज्या (अग्निहोत्रादि), अध्ययन, वणिक्पथ (सब प्रकार के व्यापार करना), कुसीद (ब्याज- सौ वर्ष में भी दूने से अधिक न लेना), कृषि (खेती) करना- यह सब वैश्य-कर्म समझे गये हैं।

शूद्र को सेवा का अधिकार है। वह भी इसलिये कि वह विद्या रहित है, मूर्ख है। जो विज्ञान-सम्बन्धी कुछ भी काम नहीं कर सकता और केवल शरीर से ही कार्य कर सकता है, वही उससे लेना उचित है। वर्णों को अपने-अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि सभ्यजनों का काम है।

गृहस्थ का महत्त्व

इस प्रकार गृहस्थाश्रम (विवाह करके गृहस्थ बनना) बहुत महत्त्वपूर्ण आश्रम है। कुछ लोग पूछा करते हैं-यह आश्रम सब से छोटा है-अथवा बड़ा? हम तो यही कहते हैं कि अपने-अपने कर्त्तव्य कर्मों में सब बड़े हैं, परन्तु जैसे नदी और बड़े-बड़े नद तब तक भ्रमते रहते हैं, जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते हैं। बिना इसके किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास तीनों आश्रमों को दान अन्नादि देकर गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है, अर्थात् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहलाता है। जो मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता है, वह प्रयत्न से गृहाश्रम को धारण करे।

जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहस्थाश्रम है। जो यह गृहस्थाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति न होती- फिर ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते?

जो गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है- जो प्रशंसा करता है, वही प्रशंसनीय है।

परन्तु स्मरण रहे यह पुण्य गृहस्थाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषों से धारण करने योग्य नहीं है, और गृहस्थाश्रम में सुख भी तभी होता है, जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न,विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। इसलिये गृहस्थाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है। समावर्तन, विवाह और गृहस्थाश्रम के विषय में यह संक्षिप्त शिक्षा लिखी गयी है।

गीत

बैठकर-निज मन से घंटों तक झगड़िए

(तर्ज - राम का गुणगान करिए)

ईश का गुणगान करिए,
प्रातः सायम् बैठ ढंग से ध्यान धरिए।।
ध्यान धरिए वह प्रभो ही इस जगत का भूप है,
यह जगत ही सच्चिदानन्द उस प्रभो का रूप है।
देख सूरज चाँद उसका भान करिए।।
हाथ में गाजर टमाटर या कोई फल लीजिए,
वाह क्या कारीगरी तेरी प्रभो कह दीजिए,
ये भजन हर वक्त हर एक स्थान करिए।।
मित्रता करनी हो तो मन से भला कोई नहीं,
शत्रुता करनी हो तो मन से बुरा कोई नहीं
बैठकर निज मन से घंटों तक झगड़िए।।

- आर्य संजीव 'रूप', गुधनी (बदायूँ)

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०

पुस्तक – परिचय

पुस्तक का नाम – विदुर नीति प्रश्नोत्तरी

लेखक:– कन्हैयालाल आर्य

प्रकाशक:– चन्द्रवती आर्या वैदिक धर्म सत्साहित्य प्रकाशन गुड़गाँव– हरियाणा

पृष्ठ संख्या – ४८७ **मूल्य** – २५०/–

हमारे देश में विद्वानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका एक धारा प्रवाह की तरह बहती चली आ रही है। उनका योगदान समाज देश राष्ट्र के लिये रहा है। उनमें धुरन्धर विद्वान् चाणक्य की नीति, संत शिरोमणि विदुर की नीति, आचार्य कणिक की नीति प्रसिद्ध हैं। विदुर की महिमा इसी प्रसङ्ग से ज्ञात हो जाती है कि योगीराजकृष्ण भी उनका आतिथ्य ग्रहण करते थे।

विदुर नीति महाभारत का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। पाण्डव कौरवों के चंगुल में फँसकर अपना राज्य यहाँ तक कि द्रौपदी को भी दाँव पर लगाकर हार गये। उन्हें १२ वर्ष का वनवास एवं एक वर्ष का अज्ञातवास दिया गया। अज्ञातवास से लौटने के बाद राज्य माँगा, मना करने पर पाँच गाँव वह भी संभव नहीं, एक इंच भूमि भी देय नहीं होगी। ऐसे में विदुर नीति में वर्णित राजधर्म को व्यवहार में लाने के लिए महाराज घृतराष्ट्र के समक्ष सारा गूढ़ ज्ञान प्रदान कर दिया परन्तु पुत्र मोह से वे ग्रसित थे। फलतः युद्ध अश्वम्भावी हो गया। और युद्ध हुआ। विदुर जी परलोक गमन की कल्याण कारी बातें घृतराष्ट्र को समझाते हैं, किन्तु मोह भंग नहीं हुआ।

श्री आर्य जी ने पाठकों के सामने जो सामग्री प्रस्तुत की है वह है विदुर नीति प्रश्नोत्तरी रूप में है। उन्होंने विदुर नीति को सहज, सरल, सार रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दी है। यह कार्य लगन व परिश्रम से किया गया है, इस हेतु उनका साधुवाद है। श्लोक – शब्दार्थ प्रश्न उत्तर से बहुत सरल कर दिया है। विद्यार्थियों के लिए भी उत्तम सामग्री आ गई है। आज के युग में हमारा दायित्व कर्त्तव्य क्या है? यह भली भाँति समझ सकेंगे।

प्रश्नोत्तर की एक झलकः–

प्रश्नः किन गुणों के कारण राजा को लोग नमस्कार करते हैं, आदर देते हैं, प्रमाण मानते हैं?

उत्तरः जो राजा क–काम और क्रोध (मन्यु) का परित्याग कर देता है। (ख) जो सुपात्र को दान देता है धनादि पदार्थ देता है (ग) जो कार्य के ऊँच–नीच (गौरव–लाघव-तारतम्य) को जानने वाला है। (घ) जो शास्त्रज्ञ (विद्वान्) और किसी विषय का विशेष जानकार है (ङ) जो कार्य को अल्प – समय में ठीक ढंग से पूरा कर लेता है– उसे ही लोग आदर देते हैं, नमस्कार करते हैं और उसी राजा को सब प्रमाण मानते हैं।

विदुर नीति प्रश्नोत्तरी रूप में सभी के लिए प्रासङ्गिक है। पठन-पाठन से कायाकल्प हो सकता है। पुस्तक का सम्पूर्ण कलेवर सामग्री जीवनोपयोगी है।

– देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ दिसम्बर २०१५ तक)

१. श्री यशपाल, नई दिल्ली २. श्रीमती उषा/श्री रमेश मुनि, अजमेर ३. सुश्री यशोदा रानी सक्सेना, कोटा, राज. ४. श्री देवमुनि, अजमेर ५. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ६. श्री किशोर काबरा, अजमेर ७. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ८. श्री गजेन्द्र सिंह, नवी मुम्बई, महाराष्ट्र ९. श्री कौशल गुप्ता, गाजियाबाद, उ.प्र. १०. श्री माँगीलाल, अजमेर ११. श्रीमती राधिका सुशान्त शर्मा, जालंधर, पंजाब १२. सुश्री सुकृति/रमन/स्वाति/प्रशान्त, जालंधर, पंजाब १३. श्री शशिभूषण मल्होत्रा, दिल्ली १४. श्रीमती प्रेमवती आर्य, अजमेर १५. श्री विवेक कुमार कुमावत, अजमेर १६. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर १७. श्रीमती यशोदा देवी लढ्ढा, अजमेर १८. श्री ओमप्रकाश लढ्ढा, अजमेर १९. श्री अविनाश दिल्ली २०. श्री अशोक कुमार गुप्ता, नई दिल्ली २१. श्री अजयकुमार, महाराष्ट्र २२. डॉ. रमाकान्त पारीक, जयपुर राज. २३. श्री इन्द्रजित देव, यमुनानगर, हरियाणा २४. श्री अनिमेश त्रिपाठी, अजमेर २५. श्री वेदानन्द २६. श्री रतनलाल, हरियाणा २७. श्री चेतराम आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा २८. श्रीमती किरण कुलश्रेष्ठ, जोधपुर, राज. २९. श्री सुदाम डोरा, गंजम, ओड़िशा ३०. श्रीमती मीनाक्षी आर्य, बीदर, कर्नाटक ३१. श्री गणेश आर्य, बिदर, कर्नाटक ३२. श्रीमती प्रेमलता मदान, नई दिल्ली ३३. श्रीमती ज्योति रथ, जबलपुर, म.प्र. ३४. श्री रामसिंह यादव, बीकानेर, राज. ३६. श्री अमित आर्य, बीकानेर, राज. ३७. श्रीमती अमिता ठाकुर/श्री प्रदीप सिंह, बीकानेर, राज.। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ दिसम्बर २०१५ तक)

१. दीपशिखा क्षेत्रपाल, अजमेर २. श्रीमती उषा/श्री रमेश मुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्री गजेन्द्र सिंह, नवी मुम्बई, महाराष्ट्र ५. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ६. श्री शान्ति स्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ७. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ८. श्रीमती प्रतिभा, हिसार, हरियाणा ९. श्री रिछपाल आर्य, दिल्ली १०. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ११. श्री भगवान सिंह चौधरी, पंचकुला हरियाणा १२. श्रीमती राधिका सुशान्त शर्मा, जालंधर, पंजाब १३. श्रीमती राजकुमारी हरबंसलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, जालंधर, पंजाब १४. श्रीमती प्रमिला मित्तल, अजमेर १५. श्री हेमराज, अजमेर १६. श्री हरिकिशन, अजमेर १७. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर १८. श्री मयंक कुमार, अजमेर १९. श्री ललित आर्य, जबलपुर, उ.प्र. २०. श्री वेदान्त शर्मा, अजमेर २१. श्री नरसिंह प्रसाद पारीक, जयपुर, राज. २२. श्री अर्दत त्रिपाठी, अजमेर २३. श्री आनन्द देव/श्री इन्द्रदेव शर्मा, उदयपुर, राज. २४. श्री आर.के. क्वात्रा/श्रीमती सुषमा क्वात्रा, गुडगाँव, हरि. २५. श्रीमती तारा यादव, अजमेर २६. श्री देवप्रकाश यादव, अजमेर २७. श्री प्रेम प्रकाश यादव, अजमेर २८. स्वामी चित्रानन्द, देहरादून, उत्तराखण्ड २९. डॉ. शशिकान्त कुलश्रेष्ठ, रोहतक, हरियाणा ३०. श्री कृष्णकुमार कुलश्रेष्ठ, जोधपुर, राज. ३१. श्रीमती सुशीला अग्रवाल, सिंगापुर ३२. श्री अभिनव तोषनीवाल,अजमेर ३३. स्व. श्री राजेश, अजमेर ३४. श्रीमती यमुना प्रभाकर राव, बेंगलौर, कर्नाटक ३५. श्री नरेश सोनी, मुंबई, महाराष्ट्र ३६. श्री नकुल पलक आर्य, अजमेर ३७. श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, मुम्बई, महाराष्ट्र ३८. श्री कृष्णसिंह राठी, झज्जर, हरि. ३९. श्री रामेश्वर लाल आर्य, बीकानेर, राज. ४०. श्री महेश सोनी, बीकानेर, राज. ४१. श्री राजेश त्यागी, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

जिज्ञासा समाधान – १०२

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा :- आचार्य जी, ''समाधान – ९३'' में आपने जो दिया है, उसमें थोड़ी-सी शंका शेष रह गई है और वह यह है कि ईश्वर ने इस साकार जगत् की रचना प्रकृति के परमाणुओं से की है। इसका मतलब प्रकृति के परमाणुओं में साकारत्व का गुण है, तभी तो साकार जगत् बन पाया। पंचभौतिक तत्त्व भी प्रकृति के परमाणुओं से ही बने हैं, तो इन परमाणुओं से निराकार पदार्थ कैसे बन जाते हैं और फिर वे निराकार पदार्थ परस्पर मिलते हैं, तो आकार कैसे ग्रहण कर लेते हैं, अर्थात् साकार कैसे बन जाते हैं? यह भाव से अभाव तथा अभाव से भाव कैसे हो जाता है?

निम्न बिन्दुओं पर भी स्थिति स्पष्ट करने का कष्ट करें-

(१) आपने आकाश निराकार बताया है। यह प्रकृति के परमाणुओं से बना है। इसी तरह वायु भी निराकार है, अग्नि जब प्रकट होती तब साकार होती है, अन्यथा निराकार। यह क्यों है?

(२) मेरे विचार से प्रलयकाल में जब प्रकृति अपने विशुद्ध रूप में होती है, तब निराकार ही होती है और ईश्वर तथा जीव निराकार होते ही हैं। फिर निराकार प्रकृति से साकार जगत् कैसे बना?

(३) महर्षि दयानन्द जी ने बताया है कि साकार चीजें असीम नहीं होती, बल्कि जीवात्माएँ भी संख्या वाली हैं, चाहे वे मनुष्य की गिनती से बाहर हों। ऐसी अवस्था में आकाश या अवकाश रूप आकाश असीम है या ससीम है?

(४) वायु ससीम है या असीम?

(५) क्या ईश्वर के अतिरिक्त अन्य भी कोई तत्त्व ऐसा है, जो असीम हो?

कृपया, समाधान करने का कष्ट करें।

- इन्द्रसिंह पूर्व एस.डी.एम. २९- नई अनाज मण्डी, भिवानी (हरियाणा) चलभाष: - ९४१६०५७८१३

समाधानः- परमेश्वर ने यह संसार अपने सामर्थ्य से मूल प्रकृति को लेकर बनाया है। संसार के बनाने में परमेश्वर निमित्त कारण और प्रकृति उपादान कारण है। स्थूल जगत् के बनने की प्रक्रिया महर्षि कपिल ने अपने सांख्य दर्शन में दी है-

सत्त्वरजतमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान्, महतोऽहङ्कारोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिद्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि......।। सां.- १.६१

सत्त्व, रज, तम- इन तीन वस्तुओं से मिलकर जो एक संघात है, उसका नाम प्रकृति है। उस प्रकृति से महतत्त्व बुद्धि, उस महतत्त्व से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्रा अर्थात् सूक्ष्म भूत- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द, दस इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से पाँच स्थूल भूत अर्थात् पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और इन पाँच महाभूतों से यह दृश्य जगत्।

प्रकृति से जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह आकार वाला होता है, क्योंकि प्रकृति स्वयं आकार वाली है, जो गुण कारण में नहीं होते, वे कार्य में भी नहीं होते। यदि ऐसा होने लग जाये, तो अभाव से भाव की उत्पत्ति माननी पड़ेगी, जो द्रव्यात्मक पदार्थों में कभी घट ही नहीं सकता। महर्षि दयानन्द ने भी प्रकृति को आकार वाला माना है। महर्षि लिखते हैं-'' ....वह प्रकृति और परमाणु जगत् का उपादान कारण है और वे सर्वथा निराकार नहीं, किन्तु परमेश्वर से स्थूल और अन्य कार्य से सूक्ष्म आकार रखते हैं।'' – स. प्र. स. ८

आपने जो कहा कि ''मेरे विचार से प्रलयकाल में जब प्रकृति अपने विशुद्ध रूप में होती है, तब निराकार ही होती है।'' यह विचार ऋषि के विचार से नहीं मिल रहा है। यदि ऐसा मान भी लें तो अभाव से भाव की उत्पत्ति वाली बात हो जायेगी, जो कि युक्त नहीं है। ऊपर जो लिखा कि प्रकृति से उत्पन्न पदार्थ आकार वाले होते हैं, इस कथन से आकाश निराकार कैसे सिद्ध होगा- यह प्रश्न खड़ा हो जायेगा। इसके लिए मेरा कथन है कि जो आपने परोपकारी के **जिज्ञासा समाधान**-९३ की चर्चा की है,

उसमें साकार निराकार की तीन परिभाषाएँ लिखी हैं, उनको यहाँ पुनः उद्धृत करता हूँ-

१. साकार वह है, जो प्रकृति से बना हुआ, इसके अतिरिक्त निराकार।

२. साकार वह, जिसमें रूप, रस, गन्धादि पाँचों गुण प्रकट हों, इससे भिन्न अर्थात् जिसमें पाँचों गुण प्रकट न हों, वह निराकार।

३. साकार वह, जिसमें केवल रूप गुण प्रकट रूप में हो, अर्थात् जो आँखों से दिखाई दे वह साकार, इससे भिन्न निराकार।

इन परिभाषाओं के आधार से पहली परिभाषा के अनुसार देखें तो जो प्रकृति से बना आकाश है, वह भी साकार होगा। जहाँ आकाश को निराकार कहा है, वहाँ सापेक्ष रूप से कहा है। आकाश पाँच भूतों में सबसे सूक्ष्म है, उसको हम केवल शब्द के आधार से अनुमान लगाकर जान पाते हैं। इसी प्रकार वायु को स्पर्श से जान पाते हैं। रूप की दृष्टि से तो ये निराकार ही कहलाएँगे।

हाँ, जिस अवकाश रूप आकाश की बात ऋषि करते हैं, जो कि प्रकृति से नहीं बना, वह तो निराकार ही है और यह अवकाश रूप आकाश असीम है। इन आकाश, वायु आदि के असीम-ससीम के विषय में हम इतना ही कह सकते हैं कि ये पदार्थ प्रकृति से बने होने के कारण ससीम हैं। शेष बाद में लिखेंगे।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पृष्ठ संख्या ४२ का शेष भाग....

११. तीर्थ यात्रा एवं दीपावली पर्व सम्पन्न- आर्यसमाज कांसा ने लोगों के मन में गुरुकुलीय परम्पराओं से परिचय कराने के लिए अनेक गाँव से चुने हुये ११६ लोगों को २४ व २५ अक्टूबर २०१५ को तीर्थ यात्रा पर लेकर गये। इस यात्रा में लोगों को तीन गुरुकुल के दर्शन कराये- गुरुकुल आश्रम आमसेना, गुरुकुल हरिपुर, गुरुकुल नरसिंहनाथ एवं पतोरा डेम नरसिंहनाथ व हरिशंकर में पर्वतों एवं झरनों के दर्शन कराये।

१२. स्नातक सम्मेन सम्पन्न- गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के कुलाधिपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती की प्रेरणा तथा स्नातक परिषद् के सौजन्य से गुरुकुल में दि. २१ व २२ अक्टूबर २०१५ को १९७० से लेकर २०१५ तक निर्गत स्नातकों का विराट सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में स्नातक-परिचय, वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित प्रश्नोत्तरी, बौद्धिक मंथन, काव्य विलास, कोने-कोने से पधारे स्नातकों में भ्रातृत्व का अपूर्व उदाहरण दृष्टिगोचर हुआ। परिषद् के संयोजक भाई कर्मवीर थे।

१३. यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज मन्दिर फरीदकोट का वार्षिकोत्सव एवं विश्व शान्ति महायज्ञ दि. ४ से ६ दिसम्बर २०१५ को सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री एवं वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश महाराज-पटियाला तथा भजनों की प्रस्तुति अल्का आर्या-ग्रेटर नोएडा ने की।

शोक सन्देश

१४. महर्षि दयानन्द सरस्वती विचार चैरिटेबल ट्रस्ट परतवाडा के माध्यम से चल रहे वैदिक धर्म प्रचार अभियान से जुड़कर समर्पित भाव से उत्साहपूर्वक कार्य करने वाले आर्यवीर करण कुमार आर्य-वानखडे, अचलपुर के पूज्य पिता **श्री देवीदास जी** का हृदयगति रुक जाने से देहान्त दि. २६ अक्टूबर २०१५ को हो गया।

१५. श्री केशवलाल जी, सेवानिवृत्त थानेदार ९८ वर्ष की आयु में देहान्त २६ नवम्बर २०१५ को जयपुर में हो गया। आपका सारा जीवन पुलिस सेवा में रहते हुए जीवन पर्यन्त आर्यसमाज को समर्पित रहे। आप आर्यसमाज सिरोही के प्रधान पद पर भी रहे व समाज की सेवा की।

१६. हिन्दी व मराठी भाषा में वैदिक साहित्य का लेखन करने वाले '**श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार**' प्राप्त लगनशील वेदप्रचारक पुरोहित तथा आर्यसमाज आलन्द, जि. गुलबर्गा, कर्नाटक के वरिष्ठ कार्यकर्ता **श्री भीमांशकर चन्दप्पा साखरे जी** का दि. २१ अक्टूबर २०१५ को ८४ वर्ष आयु में निधन हो गया। कर्नाटक व महाराष्ट्र के सीमावर्ती इलाके में मराठी, कन्नड़ व हिन्दी भाषा में यज्ञादि कार्यों के माध्यम से वेदप्रचार करने वाले श्री साखरे जी के कई लेख आर्यजगत् की कई विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपते थे।

१७. ईश कृपा से कुशल कामनोपरान्त लेखितव्य है कि परोपकारी पत्रिका दिसम्बर (प्रथम) २०१५ अंक पढ़ा। **श्री भगवान सहाय जी** के निधन का समाचार दुःखद है। आपने उनके विषय में जो भी लिखा है, वह सत्य ही है। वस्तुतः वे बहुत सज्जन व्यक्ति थे। उनकी ईश्वर भक्ति, ऋषि भक्ति, वेद भक्ति, अतिथि व देव यज्ञ के प्रति निष्ठा अन्यों के लिये अनुकरणीय है। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की धुन सदा उनमें देखी जाती थी। मैं अपने न्यास परिवार की ओर से इस दुःखद मृत्यु पर हार्दिक संवेदना प्रेषित कर रहा हूँ।-**आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक,जालोर, राज.**

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२५

वेद जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने का सन्देश देता है। इस मन्त्र में महिला के द्वारा कहा जा रहा है। प्रतिदिन सूर्योदय के साथ ही प्राणियों का भाग्योदय होता है। प्रत्येक सूर्योदय नये जीवन का सन्देश लेकर आता है। मनुष्य को अपने जीवन से निराशा को समाप्त करना चाहिए। निराशा असफलता को स्वीकार करने का दूसरा नाम है। मनुष्य के सभी मनोरथ पूर्ण नहीं हो पाते। मनुष्य को असफलता मिलती है तो निराश होने की सम्भावना होती है, किन्तु यदि दूसरा-तीसरा अवसर उसके सामने होता है तो वह निराशा की ओर न जाकर फिर से प्रयत्न करने के लिये तैयार हो जाता है। वेद कहता है- मनुष्य को कितनी भी बार असफलता क्यों न मिले, हर नया दिन एक नई सफलता का अवसर लेकर आता है, इसीलिये मन्त्र में ऋषिवर ने कहा है- यह सूर्योदय मात्र सूर्योदय नहीं है, यह मेरे सौभाग्य का उदय है। प्रतिदिन सूर्योदय के साथ मनुष्य को निराशा छोड़कर नये उत्साह और विश्वास के साथ नये दिन का प्रारम्भ करना चाहिए।

एक महिला की सफलता उसके साथ जीवन बिताने वाले की योग्यता से जुड़ी होती है। मन्त्र कहता है- **अहं तद् विद्वला**- मैंने वर को प्राप्त कर लिया है। संस्कृत भाषा के शब्दों में अद्भुत शक्ति है- अर्थ को अपने अन्दर समाने की। होने वाले पति की विवाह संस्कार के समय वर संज्ञा होती है। वर शब्द का मूल अर्थ चुना गया होता है। वर का एक अर्थ श्रेष्ठ भी होता है, व्यक्ति जब बहुतों में से चुनाव करता है, तो वह श्रेष्ठ का ही चुनाव करता है, इसी कारण विवाह के समय विवाह कर रहे युवक की संज्ञा वर होती है। जब विवाह में युवक को वर कहते हैं, तो उसी समय युवती की संज्ञा वधू होती है। वधू शब्द का अर्थ है- इसे जीवन के लक्ष्य तक पहुँचाना है अथवा जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ लेना है, जिसके साथ रखने का उत्तरदायित्व वर स्वीकार करता है। वधू को साथ रखने का जिसमें सामर्थ्य है, ऐसा चुने गये व्यक्ति की संज्ञा वर है। इससे भी रहस्य की बात है, वर शब्द बताता है कि उसे किसी ने अपने लिए चुना है, स्वीकार किया है, अतः चुनने का अधिकार वर का नहीं, वधू का है। वर तो वधू का चयन स्वीकार करता है। चुनाव की प्रक्रिया को स्वयंवर कहते हैं। स्वयंवर में वर तो युवक है, परन्तु चुनने का अधिकार युवती का है, उस चुनाव से सहमत होना, न होना, युवक की स्वतन्त्रता है। जब अनेक युवक एक युवती को प्राप्त करने में इच्छुक होते हैं, तो चयन का अधिकार युवती का होता है। भारतीय इतिहास में अनेकशः स्वयंवर के उदाहरण मिलते हैं, द्रौपदी स्वयंवर है, सीता स्वयंवर है। कालिदास के प्रसिद्ध महाकाव्य में अज- इन्दुमति स्वयंवर का चित्रण बड़ा रोचक है। स्वयंवर के समय देश के विभिन्न भागों से इन्दुमति से विवाह करने के इच्छुक राजकुमार स्वयंवर स्थल पर उपस्थित होते हैं। स्वयंवर के समय इन्दुमति की दासी सुनन्दा राजकुमारी इन्दुमति के साथ चलती है और प्रत्येक राजकुमार के सामने खड़ी होकर, राजकुमार के गुण, वैभव, विद्या, वीर्य, पराक्रम का वर्णन करती है। राजकुमारी इन्दुमति द्वारा अस्वीकृत करने पर वह अगले राजकुमार के सामने पहुँच जाती है। इस चित्रण को कालिदास ने अपने काव्य में बहुत सुन्दर ढंग से बाँधा है। वे कहते हैं-

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ ये व्यतीयाय पतिंवरासा
नरेन्द्र मार्गट्ट इव प्रपेदे विवर्ण भावं स स भूमिपालः॥

अर्थात् जब इन्दुमति राजकुमारों के सम्मुख वरमाला लेकर उपस्थित होती थी, तब राजकुमार का मुख कान्ति से दैदीप्यमान हो जाता था, जैसे चलते हुए दीपक के किसी महल के सम्मुख आने पर भवन की भव्यता प्रकाशित होती है, परन्तु जब राजकुमारी राजकुमार के सामने से बिना वरण किये आगे बढ़ जाती थी तो उस राजकुमार की कान्ति वैसी मलिन पड़ जाती थी, जैसे दीपक के भवन के सामने से निकल जाने पर, कितना भी विशाल भवन हो- अन्धकार में विलुप्त हो जाता है।

इस प्रकार महिला के अधिकारों पर एक सहज विचार इन शब्दों में प्रतिबिम्बित होता है। आज महिला के अधिकार और कर्त्तव्य का निश्चय पुरुष करना चाहता है, तब हमें वेद के इस सन्देश पर ध्यान देना चाहिये।

वेद प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान का अधिकार देता है। ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्य अपने हित-अहित का विचार कर सकता है। यदि महिला शिक्षित नहीं होगी, तो निर्णय और विचार कैसे कर सकेगी? इन मन्त्रों में अपने अधिकार, अपने कर्त्तव्य, अपनी योग्यता के कारण जो आत्मविश्वास व्यक्ति के अन्दर आता है, उसका स्पष्ट पता चलता है। अतः **तद् विद्वला पतिम्** अर्थात् मैंने अपने योग्य पति को प्राप्त कर लिया है, यह कथन उचित ही है।

क्रमशः ....

संस्था - समाचार

१ से १५ दिसम्बर २०१५

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से हैं, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द द्वारा रचित '**आर्योद्देश्यरत्नमाला**' नामक लघु ग्रन्थ का स्वाध्याय कराया जाता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन व प्रवचन होता है। यहाँ पर दर्शन, उपनिषद्, वर्णोच्चारण-शिक्षा, रचना-अनुवाद व कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीरदल का प्रशिक्षण कार्यक्रम शाम को नियमित रूप से होता है, जिसमें खेल-कूद, व्यायाम, जूडो-कराटे, लाठी चलाने का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवा और बालक भाग लेते हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि हमें केवल एक शास्त्र नहीं पढ़ना चाहिये। उससे विद्या अधूरी रहती है, सभी शास्त्रों को पढ़ना चाहिये। हमें व्याकरण, दर्शन, वेद और स्मृति आदि सभी शास्त्रों का ज्ञान होना चाहिये। सम्मेलनों में जब अनेक विद्वान् हों तो उनसे चर्चा करने में सरलता तभी होती है, जब हमें अपने विषय के साथ-साथ दूसरों के विषय की ठीक से जानकारी हो। आधुनिक के साथ प्राचीन ग्रन्थों का भी अध्ययन करना चाहिये। आर्ष ग्रन्थों की महत्ता समझाने के लिये अनार्ष ग्रन्थों की न्यूनता बताना आवश्यक है, अत: अनार्ष ग्रन्थों को तुलनात्मक दृष्टि से अवश्य ही पढ़ना चाहिये, तभी हमें दूसरों के मन्तव्यों की भी जानकारी होती है। दूसरे ग्रन्थों की प्रक्रिया, प्रयोजन व उदाहरण आदि की जानकारी होने पर ही उसका ठीक-ठीक खण्डन करना सम्भव है। तर्क और प्रमाण के बिना खण्डन नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द जी ने सभी ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उनके अनुसार दर्शन शास्त्रों का ज्ञान बौद्धिकता की कसौटी है। वेदान्त शास्त्र का विद्वान् अन्य दर्शनों को न पढ़ा हो तो वेदान्त दर्शन का अन्य दर्शनों से विरोध मानता है। वेदान्त दर्शन के विद्वान् ब्रह्म को मानते हैं, जीव की सत्ता नहीं मानते। उनका अध्ययन एकांगी है। वे योग दर्शन और न्याय आदि दर्शनों को नहीं पढ़े हैं, इसलिये उन ग्रन्थों का महत्त्व नहीं जानते। उन ग्रन्थों की निन्दा करते हैं। एक मात्र सांख्य दर्शन का विद्वान् ईश्वर नामक किसी सत्ता की आवश्यकता नहीं मानता। इसी प्रकार कोई विद्वान् अन्य किसी एक दर्शन को पढ़ा हो तो वह अन्य दर्शनों के अध्ययन का महत्त्व नहीं समझ सकता। इसका समाधान महर्षि दयानन्द जी ने बताया कि छ: दर्शनों में परस्पर विरोध नहीं है। जिस शास्त्र का जो विषय है, उसमें उसी की व्याख्या है। सभी दर्शन शास्त्रों का प्रतिपाद्य विषय अलग-अलग है।

प्रात:कालीन सत्संग में प्रवचन देते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि वेद में राजा और उनके अधिकारियों के कर्त्तव्यों के बारे में बहुत विस्तारपूर्वक बताया गया है। राजा और राजकर्मचारियों को चाहिये कि प्रजा को बुद्धि का नाश करने वाले अन्न और पेय पदार्थों का उपयोग करने से रोके । राज्य में विद्या, विज्ञान की वृद्धि के लिए पूर्ण व्यवस्था करे। लोक से वार्ताओं को सुनकर, जनता के बीच जाकर उनसे बातचीत करके समस्याओं का समाधान करे। सेना को बढ़ा कर शत्रुओं को जीते। सब काल में हर्ष और शोक का त्याग कर प्रसन्न रहे। दुष्ट, चोर, डाकुओं से रहित मार्गों का निर्माण कराये, जिससे आवागमन करके जनता बहुत धनवाली होवे। प्रजा का सब प्रकार धर्म से पालन और उन्नति करते हुए विषयों का त्याग करे और सुख-दु:ख में समान रहे।

प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि विद्वानों की मान्यता है कि जिसके अन्दर गुण होते हैं, उसको समाज, परिवार और व्यक्ति स्वीकार करता है। जिसके अन्दर विशेष गुण होंगे, उस गुण वाले को अन्य लोगों के साथ-साथ विशेष व्यक्ति भी स्वीकार कर लेते हैं। जिनमें गुण नहीं होते, उसे तो उसके घरवाले भी नहीं

चाहते, सगे पुत्र को भी धक्के देकर बाहर निकाल देते हैं। तब मनुष्य को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि लोग मेरा सम्मान क्यों नहीं करते?

आगे आपने बताया कि जो व्यक्ति समय पर सही निर्णय लेता है, उसका जीवन सुखी और सफल होता है तथा वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। जब तक मनुष्य अन्धपरम्परा का अनुयायी होता है, वह भटकता रहता है और दु:ख पाता है। विभिन्न मत-मतान्तरों में फँसकर जीवन के लक्ष्य-मुक्ति और उसको प्राप्त करने के उपाय को जान ही नहीं पाता है। छोटे और अनुचित उपायों से आत्मिक सुख नहीं मिल सकता। विद्वान् अपना मार्ग वेद के अनुसार चुनता है। मार्ग सुविधाओं से युक्त होना चाहिए। वेद के बताये मार्ग पर चलते समय भय नहीं होता। जीवन जीने के दो मार्ग हैं-प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग। यदि व्यक्ति जीवन में धर्मपूर्वक कर्त्तव्य पालन करते हुए प्रेय मार्ग पर चलता रहे तो एक दिन वह श्रेय मार्ग पर आ ही जायेगा।

आस्तिक-नास्तिक विषय पर चर्चा करते हुए **आचार्य कर्मवीर जी** ने प्रात:कालीन व्याख्यान में बताया कि आस्तिक कहलाने वालों में भी मुख्य रूप से दो प्रकार के लोग हैं। पहले -निराकार ईश्वर को मानने वाले, दूसरे-ईश्वर का अवतार और साकार स्वरूप मानने वाले। जो लोग ईश्वर की सत्ता और कर्मफल सिद्धान्त को नहीं मानते, वे भी कई बार भौतिक उन्नति करते हुए दिखाई देते हैं, किन्तु आत्मिक उन्नति नहीं कर पाते। इससे वे अनेक प्रकार के दु:ख भोगते हैं। एक समय था, जब पश्चिम के बहुत से पढ़े हुए वैज्ञानिक लोग ईश्वर को नहीं मानते थे और कहते थे- यदि धरती पर कहीं ईश्वर है, तो उसे संसार से चले जाना चाहिये। धर्म की कोई आवश्यकता नहीं है। वे केवल भोग को ही जीवन मानते हैं। वे विज्ञान की प्राप्ति के घमंड के कारण इस दृष्यमान जगत् के आधार ईश्वर को नहीं समझ पाते। जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान आधुनिक विज्ञान के पास नहीं है, इसलिये वे भौतिक रूप से समृद्ध तो हैं, किन्तु वैश्विक आतंकवाद रूपी भारी हिंसा का कारण समझने और उनका निदान करने में असमर्थ हैं। नास्तिक व्यक्ति संसार में सबसे खतरनाक होते हैं, क्योंकि वे संसार के सब साधनों को अपने सुख के लिये इकट्ठा करके अन्य लोगों को दु:ख देते हैं।

आपने आगे बताया कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में साक्षरता ही मुख्य उद्देश्य है। ईश्वर, आत्मा, धर्म, वेद आदि की शिक्षा विद्यालयों में नहीं दी जा रही है, इसलिये समाज में संवेदनहीनता, अपवित्रता, भय का वातावरण, अनुशासनहीनता, श्रद्धा के नाम पर अंधविश्वास, विश्वासघात, अनैतिकता,पक्षपात, कुटिलता, दुराचार, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक दंगे, गरीबी, भूखमरी और बीमारियाँ आदि बढ़ती जा रही हैं। अत: हमें जीवन में विज्ञान के साथ-साथ धर्म को भी स्थान देना चाहिये।

सांयकालीन सत्संग में महर्षि दयानन्द द्वारा रचित **आर्योद्देश्यरत्नमाला** के शास्त्र विषय पर चर्चा करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि जो ग्रन्थ पाँच परीक्षाओं और आठ प्रमाणों से प्रमाणित हैं और ऋषियों-महर्षियों द्वारा लिखे गये हैं, वही शास्त्र कहलाने योग्य हैं तथा जिनको पढ़कर मनुष्य की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति हो सके। कोई ग्रन्थ बहुत पुराना है या ऋषि के नाम से लिखा गया है, किन्तु प्रामाणिक नहीं है, तो उसे शास्त्र नहीं कहा जायेगा। मनु महाराज के अनुसार वेद से ही संसार में सारा ज्ञान फैला है। वेद अपौरुषेय हैं, किसी मनुष्य के द्वारा लिखे हुए नहीं हैं। वेद की भाषा किसी देश की भाषा नहीं है। वेद स्वत: प्रमाणित हैं। वेदों को छोड़कर अन्य सब दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण आदि परत: प्रमाणित हैं। वेदों के विषय में सबसे प्रमाणित और स्पष्ट ज्ञान हमें महर्षि दयानन्द जी ने दिया। ईश्वर ने सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ऋषियों के हृदय में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का प्रकाश किया। महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में लिखा है-वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद से ही मनुष्य सत्य-असत्य का निर्णय कर सकते हैं।

रविवार सायंकालीन सत्र में **ब्रह्मचारी लोकेश जी** ने बताया कि संसार के सभी प्राणी आनन्द के उच्चतम शिखर को प्राप्त करना चाहते हैं। उसी के लिये निरन्तर प्रयत्न करते रहते हैं। वेद में कहा है कि मनुष्य जीवन का मुख्य लक्ष्य सम्पूर्ण दु:खों से छूटकर ईश्वर प्राप्ति करना है। सांख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिल के अनुसार आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों दु:खों से छूटना अत्यन्त पुरुषार्थ है। विवेक से ही इन सब दु:खों से बचा जा सकता है। महर्षि दयानन्द जी ने यजुर्वेद के

भाष्य में लिखा है कि मृत्यु और दु:खों से छूटने का एक मात्र उपाय ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है। महाराज भर्तृहरि ने कहा है कि मानव का मुख्य कार्य ईश्वर प्राप्ति के लिए हृदय गुफा में धारणा, ध्यान और समाधि लगाना है। शोक, पीड़ा, चिन्ता दूर करने के लिये भौतिक वस्तुएँ ही पर्याप्त नहीं है। हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ऋषियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय करके मार्ग मिलता है। सभी लौकिक और आध्यात्मिक मनुष्यों को अपना लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ना चाहिये।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम (क) ४ से ६ दिसम्बर २०१५- आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार के वार्षिकोत्सव में व्याख्या किया।

(ख) १० से १३ दिसम्बर २०१५- बीकानेर में उपदेश किया।

(ग) १९ से २७ दिसम्बर २०१५- आर्यसमाज विधान सरणी, कोलकाता में उपदेश।

आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम (क) २३ दिसम्बर २०१५- गन्नोर, सोनीपत, हरि. में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह में मुख्यवक्ता के रूप में सम्बोधित करेंगे।

(ख) २५ से २७ दिसम्बर २०१५- माता सरोज जी, अजमेर के घर सामवेद पारायण यज्ञ में ब्रह्मा।

(ग) २७ से २८ दिसम्बर २०१५- डेगाना, नागौर, राज. में मानधना परिवार में सत्संग का कार्यक्रम।

(घ) २८ दिसम्बर से ०१ जनवरी २०१६- आर.एस.वी. स्कूल, बीकानेर में बच्चों को उपदेश प्रदान करेंगे।

आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम (क) १८ दिसम्बर २०१५- भीलवाड़ा, राज. के श्री नरेन्द्र जी लोढ़ा के जन्मोत्सव पर यज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम।

(ख) २४ से २७ दिसम्बर २०१५- बीकानेर, राज. निवासी श्रीमती सीमा आर्या जी के सेंट सीनियर सैकण्ड्री एन.एन. पब्लिक स्कूल में यजुर्वेद पारायण यज्ञ करवाएँगे, जिसमें आप ब्रह्मा के रूप में और वेदपाठी के रूप में श्री सोमेश जी रहे।

महर्षि दयानन्द उद्यान (गुरुकुल आश्रम) ग्राम- जमानी, इटारसी की ओर से प्रचार-प्रसार कार्यक्रम- आचार्य सत्यप्रिय जी के द्वारा ग्रा. बाबई, तिरवड आदि स्थानों पर सत्संग का कार्यक्रम हुआ।

- वर्तमान में ग्राम तिरवड में आर्यवीर दल की शाखा संचालित की जा रही है। ग्राम- जमानी के पास के ग्रामों में यज्ञ, सत्संग और वैदिक साहित्य बाँटने की योजना है।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - **भारतीय स्टेट बैंक,** डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रचार कार्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदिक विचार चैरि. ट्रस्ट परतवाड़ा, जिला अमरावती (महाराष्ट्र) के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १२.१०.२०१५ सोमवार, भाद्रपद अमावस्या (महाराष्ट्र में माह का अन्त पूर्णिमा को न होकर अमावस्या को होता है) से दिनांक २९.१०.२०१५ गुरुवार, अश्विन कृष्ण द्वितीया तक एक प्रचार-यात्रा का आयोजन हुआ। इस प्रचार यात्रा में परोपकारिणी सभा की ओर से पं. भूपेन्द्र सिंह जी एंव पं. लेखराम शर्मा १२.१०.२०१५ को परतवाडा आ गए, उन्होंने सांय ४ बजे आर्यवीर करण सुपुत्र श्री देवीदास जी के घर उनके जन्मदिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ किया। दूसरे दिन प्रातःकाल आप अंजन गाँव गये और वहाँ ३.३० बजे पंच फुलाबाई हरणे विद्यालय में विद्यार्थियों को वैदिक संस्कृति से परिचित कराने वाला प्रेरक कार्यक्रम रखा। इसके बाद आपने रात्रि ८.३० बजे श्री संजय शिड़के के परिवार में भजनोपदेश का कार्यक्रम रखा। १४.१०.२०१५ को प्रातः श्री संजय शिड़के जी के ही घर पर ही यज्ञ-भजन आदि का कार्यक्रम रखा। इसके बाद पुनः पंचफुलाबाई हरणे विद्यालय में ही विद्यार्थियों को भजनोपदेश से प्रेरित किया। वहाँ से चलकर प्रचार कार्य की व्यवस्था की। १४.१०.२०१५ की रात्रि के इस प्रचार में रात्रि ९.३० बजे आर्यसमाज पथरोट पहुँच गया।

पथरोटः- प्रातः आर्यसमाज में यज्ञ के बाद भूपेन्द्र जी के भजनोपदेश के बाद यज्ञ की महत्ता पर प्रवचन । इसके बाद आर्यसमाज के ही वरिष्ठ सदस्य श्री शरद् जी कोसटे के घर यज्ञ-भजन-प्रवचन।

परतवाडा- अचलपुर- रात्रि को अचलपुर के नामदर गंज चौक पर दुर्गापूजा स्थल पर यज्ञ भजन व प्रवचन आहार शुद्धि व व्यसन-मुक्ति विषय पर।

१६.१०.२०१५- अचलपुर में राजू सुपुत्र मधुकर जी के परिवार में यज्ञ भजन व प्रवचन करके निकटही सुनीजी नामदेवराव जी केघर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन। सायंकाल नामदार गंज चौक पर ही नीर गौरव विषय पर भजन - प्रवचन हुए।

१७.१०.२०१५- पंजाब राव जी के परिवार में यज्ञ-भजन-प्रवचन। बाद में श्री पंकज जी लब्हाडे के घर यज्ञ भजन-प्रवचन करके सांय काल गणेशनगर के श्री विजय जी मोटवीन के घर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन किये। नामदार गंज चौक पर आकर रात्रि के भजन-प्रवचन १० बजे बाद तक चले।

१८.१०.२०१५- परतवाडा के श्री रामेश्वर जी शास्त्री (पूर्व स्नातक गुरुकुल गौतम नगर) के घर यज्ञ भजन व प्रवचन का कार्यक्रम लगभग दो - ढाई घण्टे तक चला। सायंकाल गाँव लाखनवाडी गये। खुशाल मन्दिर में यज्ञ - भजन व प्रवचन हुए।

१९.१०.२०१५- प्रातः रायपुर के पूर्व पार्षद श्री संजय नामदेव राय तट्टे के घर यज्ञ-भजन-प्रवचन, ६-७ जनों ने यज्ञोपवती लिया। सांयकाल श्री ऋषिनाथ राउत के घर यज्ञ-भजन-प्रवचन, चार जोड़ों ने यज्ञोपवीत लिया।

२०.१०.२०१५- प्रातः प्रभुदास जी के परिवार में यज्ञ-भजन-प्रवचन। ७ जनों ने यज्ञोपवीत लिया। १२बजे गुरुद्वारे में श्री जितेन्द्र आहुजा के २४ वें जन्मदिवस पर यज्ञ-भजन व नरतन की महत्ता पर प्रवचन। सांय काल गाँव मल्हारगढ गये। आनन्द चौक स्थित दुर्गापूजा स्थल पर यज्ञ-भजन-प्रवचन।

२१.१०.२०१५ - पहाड़ी क्षेत्र में २०-२५ कि.मी. दूर जाकर गाँव सोमवार खेड़ा में श्री गजानन नारायण जी खड़के के परिवार में यज्ञ-भजन व प्रवचन।

२२.१०.२०१५- श्री प्रभुदास जी के परिवार में विजय दशमी का यज्ञ किया। पहाडी क्षेत्र को गाँव मलकापुर गये, एक मन्दिर के सामने यज्ञ-भजन-प्रवचन करके निकटवर्ती गाँव-सोमवार खेड़ा जाकर केवल भजन व प्रवचन किये।

२३.१०.२०१५- प्रातः ९.०० बजे से ११.०० बजे श्री रमेश राव जी मोतीराम जी सावरकर के परिवार में यज्ञ किया। यज्ञ के बाद भजन व प्रवचन हुए।

२४.१०.२०१५- प्रातः काल श्री अनिल जी शाहकार के घर पर शान्ति यज्ञ किया।

२५.१०.२०१५- प्रातःकाल आर्यवीर गोपाल पुत्र श्री वासुदेव जी वानखडे के घर पर यज्ञ-प्रवचन। सायं काल प्रभुदास जी के घर पर भजन--गायन एवं धर्म चर्चा।

२६.१०.२०१५- प्रातः करण कुमार आर्यवीर के घर पर यज्ञ किया। सांय को वैदिक रीति से स्व. श्री देवी दास जी का अन्तिम संस्कार।

२७.१०.२०१५-प्रातः काल गाँव वेरदा वरका जाकर श्री गंगाराम हेकडे के परिवार में यज्ञ करके भजन-प्रवचन। सांय काल गाँव-घोटा स्थित हनुमान मन्दिर पर भजन - प्रवचन हुए और रात को ९ से १० बजे तक धारणी स्थित वनवासी बच्चों के छात्रावास में छात्रों को भजन व प्रवचन का कार्यक्रम रखा।

२८.१०.२०१५- प्रातः छात्रावास के सभी - भवन में सभी छात्रों के साथ यज्ञ किया। वहाँ से चलकर गाँव रोहणी खेडा में १० से ११ बजे तक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम रखा।

आर्यजगत् के समाचार

१. पुरोहित की आवश्यकता- आर्यसमाज मन्दिर पटियाला, पंजाब के लिए सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। उचित दक्षिणा व आवास सुविधा उपलब्ध। **सम्पर्क**- ०९८१४८९९३२१

२. वार्षिक उत्सव- वैदिक आश्रम जुवाँ (पारणागड़, बलांगिर, ओड़िशा) में ९ व १० जनवरी २०१६ को वार्षिक उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इसमें स्वामी सोमानन्द जी सरस्वती (गाजियाबाद, उ.प्र.) और स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती (गोपालपुर, ओड़िशा) मुख्य वक्ता होंगे। गुरुकुल नवप्रभात आश्रम (बरगड़, ओड़िशा) के ब्रह्मचारियों के द्वारा वेदपाठ तथा वहाँ के आचार्यों के द्वारा वेद प्रवचन आदि होंगे। इसमें आप सपरिवार आकर वैदिक ज्ञानामृत का पान कर सकते हैं।

३. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आसर्यसमाज जवाहर नगर, लुधियाना का वार्षिकोत्सव २६ से २९ नवम्बर २०१५ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उक्त यज्ञ के ब्रह्मा पं. बालकृष्ण जी शास्त्री थे। उत्सव में पं. सुखपाल जी के भजन एवं डॉ. सोमदेव शास्त्री के प्रवचन हुए।

४. जन्म दिवस मनाया- ५ नवम्बर २०१५ को निष्ठावान आर्य एवं आध्यात्मिक कार्यकर्त्ता तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राज.) के अध्यक्ष श्री यशपाल यश का ६०वाँ जन्म दिवस परिजनों एवं गण्यमान्य जनों के बीच मनाया गया।

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- महिला आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर, राज. ने २५ से २९ नवम्बर २०१५ तक वार्षिकोत्सव ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ मनाया। उक्त यज्ञ में ब्रह्मा कन्या गुरुकुल हाथरस की प्राचार्या डॉ. पवित्रा आर्य थी। वेदपाठ जयपुर की श्रीमती श्रुति शास्त्री और गुरुकुल की कन्याओं ने किया। उत्सव की अध्यक्षता श्रीमती कुसुमबाला ने एवं कुशल संचालन प्रो. सुमित्रा आर्या ने किया।

६. शिविर सम्पन्न- आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में आर्य वीर दल मुम्बई ने 'आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन दि. १५ से २२ नवम्बर २०१५ तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में उत्साहपूर्वक किया। यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण शिविराध्यक्षा श्रीमती यशबाला गुप्ता एवं महिला आर्य समाज सान्ताक्रुज की संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के करकमलों से हुआ। शिविर की मुख्य शिक्षिका सुश्री सुव्रती आर्या-देहरादून गुरुकुल एवं ज्योति आर्या बागपत-मेरठ थी।

७. विमोचन व सम्मान समारोह- प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया द्वारा हिन्दी में लिखित एवं श्री हरबंसलाल कोहली द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तक 'शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द' नामक पुस्तक का विमोचन श्री आनन्द कुमार चौहान डायरेक्टर एमिटी शिक्षण संस्थान तथा ए.के.सी. ग्रुप ऑफ कम्पनी के कर कमलों से आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर-०९, नई दिल्ली में दि. १ नवम्बर २०१५ को हुआ। यह कार्यक्रम भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्त्वावधान में तथा आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् सैक्टर-०९ के सहयोग से हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रातः यज्ञ से हुआ और ओ३म् ध्वज श्रीमती संजना चौधरी के द्वारा फहराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मृदुला चौधरी ने की। आमन्त्रित विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये, जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द-पलवल वाले, डॉ. महेश विद्यालंकार, प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य आदि थे।

८. निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व मनाया- आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३२वाँ निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व यज्ञ के साथ मनाया गया। यज्ञ के आचार्य राकेशकुमार व यजमान श्री योगेश्वर दयाल आर्य थे तथा अध्यक्षता श्री आनन्दपालसिंह ने की। श्री योगेश्वर आर्य ने महर्षि के संस्कार विधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे क्रान्तिकारी अनूठे ग्रन्थों की रचना पर प्रकाश डाला।

९. प्रतियोगिताएँ- आर्यसमाज खेड़ा अफगान और वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास द्वारा कक्षा ६ से १२ तक के विद्यार्थियों की प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई, उसमें छात्रों की रुचि व ज्ञान उत्साहवर्धक था। छात्रों को नकद पुरस्कार से सम्मानित व उत्साहित किया गया।

१०. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज रामनगर, अम्बाला छावनी का १३ से १५ नवम्बर २०१५ को २४वाँ वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ सामवेद महायज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेदभारती थी। मन्त्रपाठ आचार्या जी की शिष्याओं ब्र. वन्दना व घोषा ने किया। जम्मू से डॉ. प्रतिभा पुरन्धि व पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की प्रियंका आर्या ने ओजस्वी भाषणों से श्रोताओं को आनन्दविभोर किया।

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३६ पर.....

ऋषि मेले की झलकियाँ

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक

प्रेषण : ३१ दिसम्बर, २०१५

३९५९/५९

प्रेषकः

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,